श्री राधा मान बिहारी मानगढ़

मान मन्दिर बरसाना

मासिक पत्रिका, अगस्त २०२२, वर्ष ०६, अंक ०८

राजस्थान

जयपुर, रविवार, 24 जुलाई, 2022 | श्रावण, कृष्ण पक्ष-11, 2079

एक संत ने ब्रज के पहाड़ बचाने को त्याग दी देह, श्रद्धांजलि यही... कृष्ण सर्किट में शामिल कर संरक्षित करें पर्वत

राधे राधे

...यही कहते-कहते संत विजयदास ने देह त्यागी

...क्योंकि 5 हजार वर्ष पुराने 18 पुराणों में भी ये पर्वत

जिस कनकाचल व आदिबद्री पर्वतों के 749.44 हेक्टेयर को बचाने के लिए संत ने बलिदान दे दिया। उसका जिक्र पांच हजार साल पुराने 18 पुराणों में भी है। भागवत, विष्णु पुराण, देवीभागवत, नारद पुराण, नरसिंह पुराण, ब्रह्म पुराण आदि में।

- 500 वर्ष पुरानी मीरा बाई, अष्ठछाप के कवि सूरदास की भक्ति में भी इन पर्वतों का प्रमाण। वृंदावन के इन पर्वतों का उल्लेख किया।
- इन पर्वतों के 15 किमी चौड़े व 20 किमी लंबे क्षेत्र में 2 हजार छोटे बड़े मंदिर हैं। 150 तो प्राचीन बड़े मंदिर हैं।

...कांग्रेस-भाजपा के नेताओं की खान, इनमें अफसर भी पार्टनर

ब्रज पर्वत व पर्यावरण संरक्षण समिति के अध्यक्ष राधाकांत शास्त्री बोले- इन पहाड़ों की 45 खानों में कई कांग्रेस-भाजपा नेताओं की हैं। इनमें राज्यमंत्री जाहिदा खान का बेटा साजिद भी है। कुछ अफसर पार्टनर भी हैं। इसलिए वन क्षेत्र घोषित करने का नोटिफिकेशन 9 माह अटका रहा। इन 45 खानों से पत्थरों का सालाना खनन 17 लाख टन था। माफिया ने 60 से ज्यादा स्थानों पर खनन किया। 9 महीनों में 10 फीसदी पर्वत खा गए। 125 करोड़ रु. का करीब 30 लाख टन पत्थर निकाल लिया। संत 2004 से इसका विरोध कर रहे हैं।

...ब्रज क्षेत्र सर्किट से जुड़ा तो आस्था के साथ पर्यटन बढ़ेगा

केंद्र ने रामायण सर्किट की तरह स्वदेश दर्शन योजना के विकास के लिए श्रीकृष्ण सर्किट बनाया। इसमें जयपुर का गोविंददेवजी, सीकर के खाटूश्यामजी व नाथद्वारा का धार्मिक स्थल शामिल है। केंद्र ने 2014-15 में पर्यटन और रोजगार को बढ़ावा देने के लिए 'स्वदेश दर्शन योजना' शुरू की। कृष्ण सर्किट इसी का हिस्सा है। योजना का लक्ष्य शामिल किए गए स्थानों को धार्मिक पर्यटन स्थल के रूप में विकसित कर स्थानीय लोगों को रोजगार उपलब्ध कराना है। इसी तरह राज्य सरकार यदि इन पर्वतों को धरोहर की तरह विकसित करे तो भी ये धार्मिक पर्यटन स्थल बन सकते हैं।

संत विजयदास को यह कदम क्यों उठाना पड़ा, इसकी जांच करेंगे: सीएम

- संत विजयदास के निधन दुखद है। हमने उन्हें बचाने के हर प्रयास किए। दुख है कि जब सैद्धांतिक सहमति दे दी थी तो उन्हें किन परिस्थितियों में यह दुर्भाग्यपूर्ण कदम उठाना पड़ा। इसकी जांच प्रमुख सचिव स्तर के अफसर करेंगे। बाबा के परिजनों को सहायता राशि दी जाएगी। -अशोक गहलोत, सीएम

श्रद्धांजलि: संत श्री विजय दास बाबा

मूल्य ₹ १०/-

पूज्य श्री भक्तशरण जी महाराज
श्रीमद्भागवत कथा, जलेसर, एटा

पूज्या साध्वी श्री मुरलिका जी
श्रीमद्भागवत कथा, नैरोबी, केन्या (अफ्रीका)

अनुक्रमणिका

विषय- सूची **पृष्ठ- संख्या**

०१ ब्रज-पर्वतों के रक्षार्थ बाबा विजयदास के बलिदान (आत्मदाह) से मिली 'विजय'.....०५
०२. अखबार समाचार ०६
०३. राजस्थान सरकार का पत्र १०
०४. परम कल्याणकारी 'कृष्णावतार'.....११
०५. वसुदेवनन्दन 'नन्दनन्दन' में विलीन.....१४
०६. कंस का काल 'कृष्ण'.....१६
०७. ब्रजवासी-वल्लभ 'ब्रजनन्दन'.....१८
०८. यशुमति-सुत 'बालकृष्णलाल'.....२०
०९. श्रीकृष्णजन्म से हुआ सर्वसमृद्धिमय ब्रज.....२३
१०. मंगलनिधि 'नन्दोत्सव'.....२६
११. निष्कामता से अनन्य प्रेम.....२८
१२ .साधन-साध्य 'श्रीइष्ट-भक्ति'.....३०
१३. निर्वासना से निर्मलता.....३३

श्रीमानमंदिर की वेबसाइट www.maanmandir.org के द्वारा आप प्रातःकालीन सत्संग का ८:०० से ९:०० बजे तक तथा संध्याकालीन संगीतमयी आराधना का सायं ६:०० से ७:३० बजे तक प्रतिदिन लाइव प्रसारण देख सकते हैं।

|| राधे किशोरी दया करो ||
हमसे दीन न कोई जग में,
बान दया की तनक ढरो |
सदा ढरी दीनन पै श्यामा,
यह विश्वास जो मनहि खरो |
विषम विषयविष ज्वालमाल में, विविध ताप तापनि जु जरो |
दीनन हित अवतरी जगत में,
दीनपालिनी हिय विचरो |
दास तुम्हारो आस और की,
हरो विमुख गति को झगरो |
कबहूँ तो करुणा करोगी श्यामा,
यही आस ते द्वार पर्‌यो |

— *पूज्यश्री बाबामहाराज कृत*

संरक्षक- **श्रीराधामानबिहारीलाल**

प्रकाशक – **राधाकान्त शास्त्री,**
मानमंदिर सेवा संस्थान,
गह्वरवन, बरसाना, मथुरा (उ.प्र.)
mob. राधाकांत शास्त्री 9927338666
ब्रजकिशोरदास.....6396322922
(Website :www.maanmandir.org)
(E-mail :info@maanmandir.org)

परम पूज्यश्री रमेश बाबा महाराज जी
द्वारा सम्पूर्ण भारत को आह्वान –
"मजदूर से राष्ट्रपति और झोंपड़ी से महल तक रहने वाला
प्रत्येक भारतवासी विश्वकल्याण
के लिए गौ-सेवा-यज्ञ में भाग ले |"

*** योजना ***

अपनी आय से १ रुपया प्रति व्यक्ति प्रतिदिन निकाले व मासिक, त्रैमासिक, अर्धवार्षिक अथवा वार्षिक रूप से इकट्ठा किया हुआ सेवा-द्रव्य किसी विश्वसनीय गौ-सेवा प्रकल्प को दानकर गौ-रक्षा कार्य में सहभागी बन अनंत पुण्य का लाभ लें | हिन्दू-शास्त्रों में अंश मात्र गौ-सेवा की भी बड़ी महिमा का वर्णन किया गया है |

विशेष:- इस पत्रिका को स्वयं पढ़ने के बाद अधिकाधिक लोगों को पढ़ावें, जिससे आप पुण्यभाक् बनें और भगवद्-कृपा के पात्र बनें | हमारे शास्त्रों में भी कहा गया है –

सर्वे वेदाश्च यज्ञाश्च तपो दानानि चानघ | जीवाभयप्रदानस्य न कुर्वीरन् कलामपि || (श्रीमद्भागवतजी ३/७/४१)

अर्थात् 'भगवत्तत्त्व' के उपदेश द्वारा जीव को जन्म-मृत्यु से छुड़ाकर उसे अभय कर देने में जो पुण्य होता है, 'समस्त वेदों के अध्ययन, यज्ञ, तपस्या और दानादि से होनेवाला पुण्य' उस पुण्य के सोलहवें अंश के बराबर भी नहीं हो सकता |

प्रकाशकीय

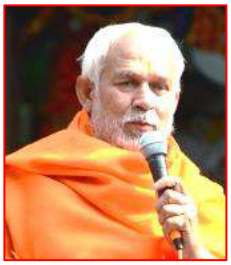

समर्पण की उत्सुकता में प्राणोत्सर्जन कर सदा-सदा के लिए अपने को अमर बनाकर एक बार फिर बलिदानियों की अमर गाथा का स्मरण करा दिया ब्रजनिष्ठ संत विजयदास बाबा ने | यों तो हम जन्म-जन्मान्तरों पर्यन्त साधन के शिखर पर पहुँचकर भी जिस देहासक्ति से मुक्त नहीं हो पाते हैं परन्तु कौन, कब, किस रीति से असम्भव को सम्भव करता हुआ अलभ्य को सहज सुलभ कर देगा, यह कहा नहीं जा सकता | महर्षि दधीचि ने जैसा आत्मबलिदान किया, वह घटना साधारण जनमानस को कल्पना-सी लगती होगी परन्तु महात्माजी ने भी वैसे त्याग-बलिदान का प्रत्यक्ष दर्शन कराकर समग्र राष्ट्र के प्रणम्य बन गए | घटना है १५ वर्ष पूर्व आये हरियाणा के ऐसे लाल की, जिन्होंने ब्रजभूमि के प्रति अपने प्रेम को अमर बना दिया |

ब्रज के परम विरक्त संत पद्मश्री पूज्य श्रीरमेशबाबा जब घर से निकले थे तो यही भावना लेकर ब्रज-वसुन्धरा के अनन्याश्रय में गाते थे कि "मरना तेरी गली में, जीना तेरी गली में" और विगत ७० वर्षों में कभी ब्रज से बाहर नहीं गये | यही कारण है ऐसे परम विरक्त संत की सन्निधि ने बाबा विजयदास को भी ब्रज के लिए मरना-जीना सिखा दिया; ५५१ दिन तक ब्रज के दिव्य पर्वतों के रक्षार्थ आन्दोलन करते हुए पशुपतिनाथ मंदिर पसोपा पर आराधनरत दिनांक २०/७/२०२२ को राजस्थान सरकार के आला अधिकारियों की हठधर्मिता के कारण नहीं रुक रहे 'पर्वतीय विनाश' को 'आत्मदाह' कर सदा के लिए विराम लगा दिया | दूसरे दिन ही राजस्थान सरकार ने लगभग ७५० हेक्टेयर पर्वतीय भूमि को वनभूमि में स्थानान्तरित कर सुरक्षित कर दिया | 'पर्यावरण की रक्षा अथवा श्रीकृष्ण लीलास्थलियों का संरक्षण' कर बाबा विजयदास ने राष्ट्र को गौरवान्वित कर दिया | आज राष्ट्र के साथ हम सब भी उन्हें नमन करते हुए श्रद्धांजलि देते हैं, उनके इस बलिदान को हमेशा याद रखेंगे |

प्रबन्धक

राधाकान्त शास्त्री

श्रीमानमंदिर सेवा संस्थान ट्रस्ट

ब्रज-पर्वतों के रक्षार्थ 'बाबा विजयदास' के बलिदान (आत्मदाह) से मिली 'विजय'

देश के लिए बलिदान देने वालों की गाथा तो हमने बहुत सुनी होंगी पर आज प्रत्यक्ष ब्रजभूमि के लिए अपने प्राणों की आहुति देने बाले 'विजयदास बाबा' भी ब्रज के इतिहास में अमर होकर ब्रजभक्तों के मन-मस्तिष्क में सदा-सदा के लिए स्मरणीय बन गए | ब्रज के दिव्य पर्वत आदिवद्री व कनकाचल जो कि राजस्थान के डीग तहसील में आते हैं, इन्हें खनन-मुक्त कराने की माँग को लेकर पिछले ५५१ दिनों से धरने पर बैठे साधु-संतों में से बाबा विजयदास व हरिबोल बाबा ने राजस्थान सरकार को कुछ दिन पहले अवैध-खनन रुकवाने का आगाह किया था, लेकिन राजस्थान-सरकार ने कोई ध्यान नहीं दिया, जिससे संतों के सब्र का इम्तिहान हो गया - संत विजयदास ने सोचा कि जब ब्रज की धरोहर व पहिचान 'वन- पर्वत' ही नहीं रहेंगे तो जीने से क्या लाभ ? इसी विचार से संत श्रीविजयदासजीमहाराज ने २० जुलाई २०२२ को दोपहर के समय अपने शरीर को आग के हवाले कर दिया | एम्बुलेंस से तुरन्त भरतपुर ले जाया गया, वहाँ से जयपुर प्रस्थानान्तरित किया गया और जयपुर से दिल्ली, जहाँ पहुँचकर इलाज के दौरान २३ जुलाई, शनिवार रात ३ बजे उनका निधन हो गया | विजयदासजीमहाराज पिछले १५ वर्ष से मानमन्दिर पर परम ब्रजनिष्ठ संत श्रीरमेशबाबाजीमहाराज के आनुगत्य में रह रहे थे; आपने 'बाबाश्री' की आज्ञा से ब्रज, हरियाणा व राजस्थान में हरिनाम-प्रचार भी किया, बाबाश्री के द्वारा चलाये जा रहे वृक्षारोपण-अभियान में भी अग्रणी भूमिका निभाई | आपके ब्रजभूमि के लिए किये गए योगदान व बलिदान को सदियों तक भक्त-समुदाय याद रखेगा | भगवान् श्रीराधामाधव की निकुंज लीला में आप धराधाम से सदा के लिए प्रवेश कर गए |

५५१ दिनों से चल रहे इस आन्दोलन में मुख्य भूमिका रही <u>ग्राम पसोपावासियों</u> की, जिनकी मधुकरी (भिक्षान्न) के बल पर ये साधु-संत पसोपा ग्राम में इतने दिनों तक रहकर इस आन्दोलन को गति दे पाए | पसोपा के ब्रजवासियों ने भी साधु-संतों की सेवा में कोई कसर नहीं छोड़ी, आधी रात को भी संतों की सेवा में तत्पर रहे; इसके अलावा इन्होंने आन्दोलन में भी पूरी तरह भाग लिया, हर तरह का सहयोग किया | पसोपा के पास के पाँच गाँवों के ब्रजवासियों का भी इस आन्दोलन में सम्पूर्ण सहयोग मिला | संत विजयदास बाबा पसोपावासियों व सभी ब्रजवासीजनों के बहुत ही प्यारे थे, आपने ही यहाँ प्रभातफेरी प्रारम्भ करवाई, आप नित्य ग्रामवासियों को भक्तमाल की कथा सुनाते थे | इसके अलावा मानमन्दिर द्वारा गठित <u>"ब्रज पर्वत व पर्यावरण संरक्षण समिति"</u> के कार्यकर्ताओं (जो कि ब्रज के गाँव-गाँव में बनाए गए हैं) का भी इस आन्दोलन में पूरा सहयोग रहा | समिति के आह्वाहन पर ब्रज के प्रत्येक गाँव से कार्यकर्ताओं ने समय-समय पर आकर बढ़-चढ़ कर हिस्सा लिया | इस आन्दोलन की सफलता में संत विजयदास बाबा के बलिदान के अलावा 'ब्रजवासियों' का भी भरपूर योगदान रहा है

राजस्थान पत्रिका

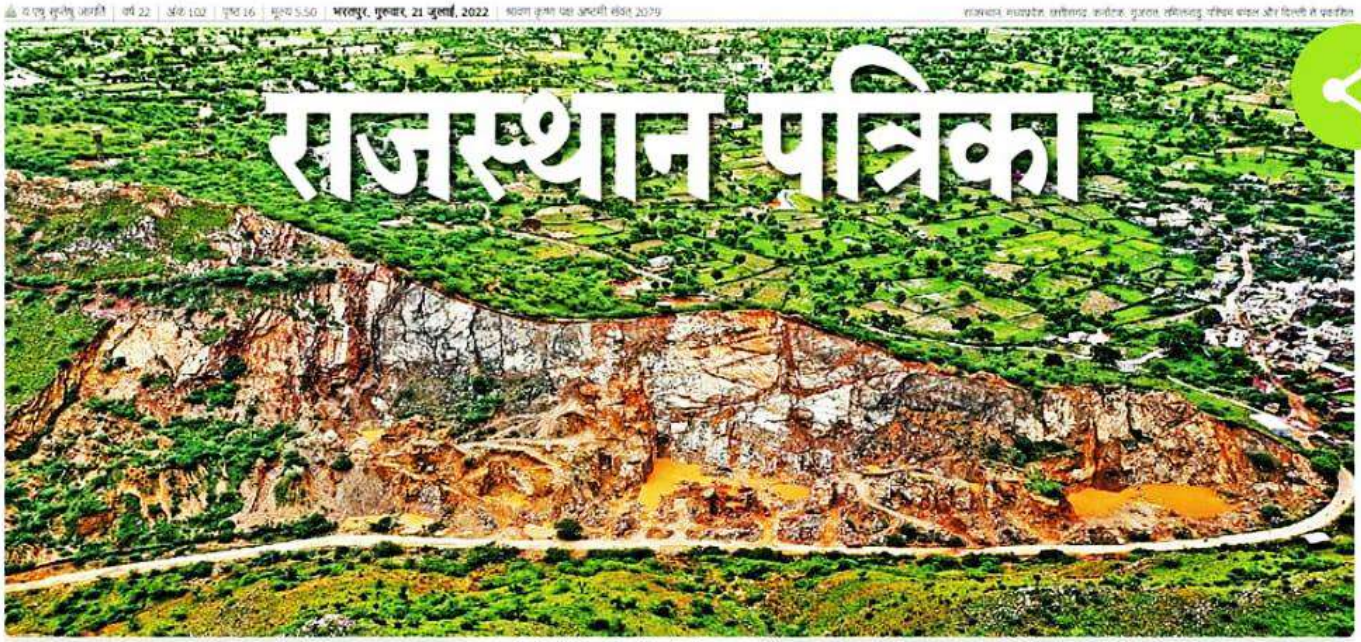

ये जख्म कभी नहीं भरेगा

अजमेर जिले के खरेखड़ी गांव में बेखौफ खनन माफिया ने जेसीबी के पंजे से छलनी कर दिया पहाड़ का सीना

कैबिनेट मंत्री विश्वेंद्र सिंह बोले: 15 दिन में दोनों पहाड़ों में आवंटित लीजों को घोषित कराएंगे वन संरक्षित क्षेत्र

आदिबद्री-कनकांचल पर नहीं रुका खनन, विजय बाबा ने खुद को लगाई आग

- 85% झुलसे बाबा विजय, जयपुर किया रैफर, संक्रमण की आशंका
- एसएमएस अस्पताल में भर्ती
- मंत्री के आश्वासन के बाद गांव पसोपा में चल रहा आंदोलन समाप्त

लपटों में घिरे बाबा, पुलिसकर्मियों ने बचाई जान...

भरतपुर . बुधवार को धरना स्थल पर बाबा विजय ने खुद को आग लगा ली। लपटों में घिरे बाबा को बचाने के लिए मशक्कत करते पुलिसकर्मी।

बाबा हरिबोलदास ने मुख्यमंत्री आवास के सामने दी थी आत्मदाह की चेतावनी

ऐसे शुरू हुआ आंदोलन

16 जनवरी 2021 से धरना... लेकिन मूक बने रहे जिम्मेदार अधिकारी

551 दिन से खनन के विरोध में पसोपा में साधु-संतों के साथ ग्रामीण भी धरने पर बैठे थे।

- **16 जनवरी 2021**
- **6 अप्रेल 2021**
- **11 जुलाई 2021**
- **11 सितंबर 2021**
- **01 वर्ष**

आदिबद्री पर्वत पर आवंटित लीज

कनकांचल पर्वत पर आवंटित लीज

हाल ही में 30 साल बंद एक लीज शुरू हुई

115 हेक्ट. में संचालित है लीज

चिकित्सा मंत्री पहुंचे एसएमएस अस्पताल

झरोखा

डिस्कॉम्स के आदेश- अगस्त-सितम्बर के बिल में जुड़कर आएगी राशि

बिजली उपभोक्ताओं पर फिर फ्यूल सरचार्ज, वसूलेंगे 24 पैसे प्रति यूनिट

छूट वाले उपभोक्ता भी दायरे में

कोरोना : अब 246 नए मामले, जोधपुर में सर्वाधिक, 2 की मौत

पूरे प्रदेश में पांच दिन तक होगी अच्छी वर्षा

सावन की मेहर... चार जिलों में बरसे मेघ

दैनिक भास्कर **जयपुर 21-07-2022**

आप पढ़ रहे हैं देश का सबसे विश्वसनीय और नंबर 1 अखबार

दैनिक भास्कर

कुल पृष्ठ 18 **राजस्थान** मूल्य ₹ 4.50 | वर्ष 26, अंक 212, महानगर

dainikbhaskar.com | जयपुर, गुरुवार, 21 जुलाई, 2022 | श्रावण, कृष्ण पक्ष-8, 2079 | 12 राज्य | 61 संस्करण

सुविचार
चैंपियन वह है, जो तब प्रयास करता है जब उसकी राह सबसे मुश्किल है।

संसेक्स 55,397.53 +629.91
डॉलर 80.05 +0.13
मानसून: देश में औसतन 380.1 मिमी बारिश
जयपुर अब तक 218 मिमी | कम/ज्यादा +27 मिमी
• पिछले साल अब तक 118 मिमी बारिश हुई थी।
बीसलपुर
फुल टैंक लेवल 315.50 आरएल मी. | आज तक 309.15 आरएल मी.

पहले खनन की आग लगाई

551 दिन आंदोलन, प्रियंका व सीएम से भी मिले... खनन नहीं रुका, अब साधु ने खुद को लगाई आग, 80% झुलसे

राधे-राधे कहते हुए दौड़े साधु, 5 तहसीलों में दूसरे दिन भी इंटरनेट बंद

डीग (भरतपुर) | भरतपुर में आदिबद्री और कनकाचल पर्वतों में खनन के खिलाफ 551 दिन से धरना दे रहे साधु-संतों का आंदोलन बुधवार को उग्र हो गया। डीग के पसोपा में पुलिस-प्रशासन 31 घंटे से मोबाइल टावर पर चढ़े बाबा नारायण दास को नीचे उतरने के लिए मना रहे थे, तभी साढ़े 11 बजे पशुपति नाथ मंदिर के महंत विजयदास बाबा (60) ने खुद को आग लगा ली। वे राधे-राधे कहते हुए दौड़ने लगे। पुलिस ने तत्काल कपड़े व कंबल डालकर आग बुझाई। बाबा 80% झुलस चुके हैं और उन्हें जयपुर रेफर किया गया है। इधर, समझाइश के बाद बाबा नारायण दास दोपहर 1:18 बजे टावर से उतरे। इधर, अफवाह रोकने के लिए जिले की 5 तहसीलों डीग, नगर, कामां, पहाड़ी और सीकरी में इंटरनेट दूसरे दिन भी बंद रहा। सही मायनों में यह पूरी आग खान विभाग की लगाई हुई है। खननकर्ताओं और अफसरों का गठजोड़ इतना प्रभावी है कि खनन रुकवाने के लिए साधु संत 551 दिन से आंदोलनरत हैं। पहले कांग्रेस नेता प्रियंका गांधी और बाद में खुद सीएम अशोक गहलोत से भी मिले। लेकिन यहां न खनन रुका न इसे वन क्षेत्र घोषित किया गया।

पर्यटन मंत्री, संभागीय आयुक्त, आईजी से वार्ता के बाद समझौता....15 दिन में जारी होगा नोटिफिकेशन

फिर बुझाई... आदिबद्री व कनकाचल में 749 हेक्टे. वन क्षेत्र घोषित होगा, खनन बंद, लीज शिफ्ट करेंगे

भरतपुर | साधु के आत्मदाह की कोशिश के बाद सरकार-प्रशासन के हाथ-पांव फूल गए। विरोध की आग बुझाने के लिए संभागीय आयुक्त, कलेक्टर, आईजी और एसपी के बाद खुद पर्यटन मंत्री विश्वेंद्र सिंह संतों से मिलने पहुंचे। बाबा हरिबोल, गोपेश, राधाप्रिय, रमाकांत शास्त्री, सुनील सिंह, महंत शिवराम दास आदि से वार्ता के बाद संतों ने धरना समाप्त कर दिया। इनमें तीन मुख्य समझौते हुए। **पहला-** कनकाचल व आदिबद्री की 749.44 हेक्टेयर जमीन को वन क्षेत्र घोषित किया जाएगा। इसकी कार्रवाई अगले 15 दिन में होगी। इससे पहले 12 अक्टूबर 2021 को प्रस्ताव भेजा गया था। **दूसरा-** खनन बंद होगा। लीज 2 माह में शिफ्ट होंगी। **तीसरा-** कनकाचल और आदिबद्री क्षेत्र को देवस्थान, वन व पर्यटन विभाग धार्मिक तीर्थ स्थल के रूप में विकसित करेंगे।

भास्कर EXPLAINER 670 हेक्टेयर में खनन, ब्रज क्षेत्र में अवैध खनन भी

क्या इस क्षेत्र में खनन अवैध है?
करीब 670 हेक्टेयर क्षेत्र में 45 लीज हैं। कनकाचल में 11, आदिबद्री पर 34 लीज हैं। सबसे बड़ी लीज 72 हेक्टेयर की है। ये भूआपुरगढ़ी, ककराला, नांगल, सुलेपुर, रूपवास, कोरली, मुंगस्का, समसलक और जोधपुर गांव के निकट हैं। साधु इसे संरक्षित वन घोषित कराना चाहते हैं। खान मंत्री प्रमोद जैन भाया बोले- जिन खानों को बंद करने की मांग हो रही है, वे वैध हैं। पहाड़ी के आसपास 55-60 लीज हैं। एनवायर्नमेंटल क्लीयरेंस हैं। साधु-संतों का कहना है कि अवैध खनन भी हो रहा है। माफिया, अफसर, पुलिस का गठजोड़ है।

इस क्षेत्र में खनन का विरोध क्यों?
अरावली पर्वत को सबसे प्राचीन पर्वत माना गया है। इसके तीन खंड त्रिदेव की तरह पूज्य हैं। कनकाचल और आदि बद्री पर्वतों को ब्रज का हिमालय खंड माना गया है। यहां हिमालय की तरह बदीनाथ, केदानाथ, पशुपतिनाथ, गंगोत्री, यमुनोत्री, देव सरोवर, त्रिवेणी, हर की पैड़ी, लक्ष्मण झूला, नीलकंठ आदि हैं। मान्यता है कि कनकाचल पर्वत में कई पौराणिक अवशेष हैं। इनकी श्रद्धालु परिक्रमा करते हैं।

यह 84 कोस परिक्रमा का हिस्सा

सरकार को लीज क्यों शिफ्ट करनी पड़ी?
साधु-संतों का दबाव था। एक साधु टावर पर चढ़े तो एक ने खुद को आग लगा ली। आंदोलन के अगुआ बाबा हरिबोल दास 17 जुलाई को आत्मदाह की चेतावनी दे चुके। 5 संत पिंडदान कर चुके हैं।

रोक के बावजूद अवैध खनन: राजे
पूर्व सीएम वसुंधरा राजे ने कहा- अवैध खनन बंद कराने की साधु-संतों की मांग पर राज्य सरकार ने ध्यान नहीं दिया। एक संत के आत्मदाह का प्रयास इसी का परिणाम है। ये कैसी विडम्बना है कि रोक के बाद भी अवैध खनन हो रहा है। इसके लिए सरकार जिम्मेदार है।

भास्कर Analysis • सरकार ने विस में दी जानकारी

खान मंत्री को ही भाया अवैध खनन, उनका जिला बारां नं.1

समकित जैन कोटा | हरियाणा में पत्थरों के डंपर से कुचलकर डीएसपी की हत्या और भरतपुर में खनन के खिलाफ साधु के आत्मदाह की कोशिश के बाद भास्कर ने प्रदेश में अवैध खनन की पड़ताल की। इसमें सबसे अधिक अवैध खनन तो खान मंत्री प्रमोद जैन भाया के जिले बारां में ही हो रहा है। दूसरे नंबर पर यूडीएच मंत्री शांति धारीवाल का जिला कोटा है। प्रदेश में जनवरी 2020 से जनवरी 2022 तक 2 वर्षों में अवैध खनन के 4,868 मामले सामने आए। तीन साल में यह आंकड़ा 9 हजार से अधिक है। इस अवधि में खान विभाग ने 1303, वन विभाग ने 3565 केस दर्ज किए। ये जानकारी भाजपा विधायक संदीप शर्मा के एक सवाल के जवाब में सरकार ने विधानसभा में दी है।

टॉप-10 जिले, जहां सर्वाधिक केस

जिला	खान विभाग	वन विभाग	कुल
बारां	12	481	493
कोटा	52	404	456
अलवर	37	363	400
चित्तौड़गढ़	56	248	304
टोंक	22	236	258
बूंदी	60	189	249
भीलवाड़ा	194	52	246
स.माधोपुर	19	210	229
करौली	6	205	211
जयपुर	40	170	210

(खनन व वन विभाग की कार्रवाई जनवरी 2020 से जनवरी 2022 तक)

कागजों में साल-दर-साल ऐसे घट रहा है खनन-भंडारण और वसूली

विभागीय रिकॉर्ड	2018-19	2019-20	2020-21	2021-22	कुल
अवैध खनन-निकासी	16,856	13,229	10,142	6,640	46,867
एफआईआर	1,854	930	760	598	4,142
जब्त मशीनें-वाहन-औजार	17,379	13,355	10,076	6,723	47,533
वसूली (करोड़ में)	105.02	85.47	79.57	52.05	322.00

खनन माफिया के हमले में 130 पुलिसकर्मी घायल हुए

साढ़े तीन साल में माफिया के 250 हमले, खनन वाहनों से 30 जानें गईं

जयपुर | भरतपुर में खान विभाग भले ही वैध खनन का हवाला दे रहा हो, लेकिन सच यह है कि प्रदेशभर में अवैध खनन जोरों पर है। इन्हें रोकने पर माफिया पुलिस और खान विभाग के कर्मचारियों पर ही नहीं, बल्कि आम जन पर हमला करने से भी नहीं चूकते। पिछले साढ़े तीन साल में ही अवैध खनन माफिया ने 250 हमले किए। इनमें से 130 पुलिसकर्मी, 50 आमजन घायल हुए। अवैध खनन परिवहन करने वाले वाहनों ने 52 हादसे किए। 30 जनों की मौत हुई, 37 घायल हुए।

153 मामलों में चालान, पांच मामलों में एफआर

100 की जांच पेंडिंग, 600 गिरफ्तारियां हुईं

हादसे करने वाले 45 वाहन जब्त, 68 गिरफ्तारियां

अरावली का दर्द: माफिया 128 में से 31 पहाड़ खा गए; सुप्रीम रोक भी बेअसर | पढ़ें अंतिम पेज

भास्कर इंटरव्यू सत्र शुरू पर शिक्षकों को तबादलों का इंतजार, अंग्रेजी माध्यम स्कूलों पर भी संशय; **शिक्षा मंत्री से सीधी बात**

ज़ुबैर को सभी 6 मामलों में बेल, 24 दिन बाद जेल से छूटे

मथुरा विशेषांक

परिधि समाचार

हिंदी दैनिक

मीडिया का नया अवतार

ताज़ा खबरों के लिए log.on ps24.in

वर्ष : 02 अंक : 53 कानपुर, सोमवार 25 जुलाई 2022 पृष्ठ :4 मूल्य : 2 रूपये

वितरित क्षेत्र : नई दिल्ली, बिहार, झारखंड, लखनऊ, हमीरपुर, उन्नाव, कानपुर देहात, इटावा, औरैया, मथुरा, फिरोजाबाद, आगरा, अलीगढ़, एटा, कासगंज, शाहजहाँपुर, कन्नौज, हरदोई, वाराणसी, पीलीभीत, चंदौली, मुरादाबाद, फैजाबाद, बाराबंकी, सीतापुर, लखीमपुर खीरी, गोंडा, जालौन, अमेठी, जौनपुर, बलरामपुर

माता जी गौशाला पहुँचा पांच सदस्यीय सांसदों का दल

– भाजपा के पांच राष्ट्रीय प्रतिनिधि मंडल ने की ब्रज के संतो के साथ की बैठक

– संतों की सुरक्षा को लेकर गंभीर नहीं राजस्थान कांग्रेस सरकार– प्रदेश प्रभारी अरुण सिंह

परिधि समाचार मथुरा
राजन सिंह

मथुरा रविवार को बरसाना – डीग के पसोपा में संतों द्वारा पिछले डेढ़ साल से आदिबद्री और कंकांचल पर्वत की पहाड़ियों पर हो रहे अवैध खनन के विरोध में जो धरना दिया जा रहा था उस दौरान बरसाना के संत विजय दास बाबा की मौत के बाद बीजेपी के राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा द्वारा घटना स्थल का मुआयना किया । उसके बाद सासदों का पांच सदस्यीय दल गठित कर माता जी गौ शाला पहुंचे , वहाँ सांसदों ने विजय दास बाबा को श्रद्धांजलि दी। फिर बृज के संतों के साथ

बैठक की। इस दौरान संतों से राजस्थान के आदिबद्री में हो रहे अवैध खनन को लेकर जानकारी ली। संतों द्वारा कहा गया कि अगर 60 दिन के अंदर अवैध खनन नहीं रोका गया तो एक बड़ा आंदोलन हमारे द्वारा किया जाएगा। और संतों ने पूरे मामले की सीबीआई जांच की मांग की। संसदीय दल का प्रतिनिधित्व कर रहे बीजेपी के राष्ट्रीय महामंत्री और राजस्थान के प्रदेश प्रभारी अरूण सिंह जी ने राजस्थान की कांग्रेस सरकार पर सीधा निशाना साधा । उन्होंने कहा कि राजस्थान की कोंग्रेस सरकार संतो की सुरक्षा को लेकर गंभीर नही है । उन्होंने कहा कि राजस्थान के आदिबद्री और कंकांचल की पहाड़ियों में जो खनन हो रहा है उसमें कांग्रेस सरकार का पूरा हाथ है और इनके मंत्रियों का अवैध खनन में पूरा सहयोग है। यहा खनन हो रहा है संत इतने पिछले डेढ़ साल से आन्दोलन कर रहे हैं सरकार ने संतों की नहीं सुनी इस कारण संत विजय दास बाबा ने इतना बड़ा कदम उठाया और अपने प्राण त्याग दिए। संतों को वन संरक्षक और श्रद्धालुओं के आस्था के केन्द्र को बचाने के लिए इतना बड़ा संघर्ष करना पड़ा । यह पर्वत श्रद्धा का केंद्र है । सभी संतो ने एक मत होकर सीबीआई जांच की मांग की तथा दोषियों को सजा देने की भी मांग की । इस दौरान राजस्थान भाजपा के अलवर सांसद बालक नाथ दास , भरतपुर सांसद रंजीता कोली , जवाहर सिंह बेडम , संत रामकृष्ण दास , सुनिल सिंह , देवकी नंदन महाराज , दीन बंधु दास व गोपेश बाबा आदि उपस्थित थे ।

***साधु संतों ने प्रधानमंत्री गृहमंत्री एवं मुख्यमंत्री के नाम सीबीआई जांच के लिए सौंपा ज्ञापन**

*** कल साधु संत संत विजय दास बाबा की मृत्यु को लेकर करेंगे एफ.आई.आर**

*** अगर आदेश 2 दिन पूर्व होता तो आज संत विजय दास बाबा हमारे बीच होते; साधु संतों को प्रभावित करने के लिए प्रशासन अपना रहा दमन की नीति- गोपेश बाबा**

*** सरकार अति शीघ्र आदि बद्री व कनिकाचल पर्वत के सारे क्रेशर एवं मशीनें हटाकर खानों को खत्म करें - राधाकांत शास्त्री**

*** 29 जुलाई से प्रारंभ होगी संत विजय दास बाबा के धामगमन पर 'श्रीमद्भागवत शांति यज्ञ कथा' देशभर से आएंगे हजारों वैष्णव साधु संत, ब्रज उपासक**

भरतपुर मामले में भाजपा नेता बोले...

'खनन माफिया को संरक्षण देने वाली सरकार बाबा की मौत की जिम्मेदार'

पत्रिका न्यूज नेटवर्क

patrika.com

जयपुर. अवैध खनन रुकवाने की मांग को लेकर आंदोलनरत बाबा विजयदास की मौत के बाद विपक्ष राज्य सरकार पर हमलावर हो गया है। भाजपा ने गहलोत सरकार को विजयदास के आत्मदाह और मौत का जिम्मेदार ठहराया है। भाजपा प्रदेशाध्यक्ष सतीश पूनिया, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष वसुंधरा राजे, केंद्रीय मंत्री गजेन्द्र सिंह शेखावत सहित अन्य नेताओं ने राज्य सरकार पर जमकर निशाना साधा है। भाजपा नेताओं ने राजस्थान सरकार पर लापरवाही का आरोप लगाते हुए कहा कि इस मामले में संत समाज में आक्रोश है।

फिर शुरू हुआ खनन

मुख्यमंत्री ने असहाय होकर स्वीकार किया कि प्रदेश में अवैध खनन नहीं रुक रहा। इससे स्पष्ट हो जाता है कि संत की मौत की जिम्मेदार राज्य सरकार है। भाजपा सरकार ने संत समाज की मांग पर 27 जनवरी 2005 को ब्रज क्षेत्र में अवैध खनन पर रोक लगाई थी। कांग्रेस सरकार में यहां अवैध खनन फिर से शुरू हो गया है।

वसुंधरा राजे,
राष्ट्रीय उपाध्यक्ष, भाजपा

राज्य सरकार की अनदेखी ने बाबा विजयदास को आत्मदाह के लिए विवश किया। संत समाज से अधिक माफिया का मत मानने वाला शासन-प्रशासन इस सामाजिक क्षति का जिम्मेदार है।

गजेन्द्र सिंह शेखावत,
केंद्रीय मंत्री

कांग्रेस सरकार की हठधर्मिता, संवेदनहीनता व आंदोलनरत साधु-संतों की मांगों को गंभीरता से नहीं सुनने का परिणाम रहा कि संत विजयदास को आत्मदाह करना पड़ा।

राजेन्द्र राठौड़,
उपनेता प्रतिपक्ष

खनन माफिया को संरक्षण देने वाली राज्य सरकार बाबा विजयदास की मौत की जिम्मेदार है। आंदोलन सरकार के संज्ञान में होने के बावजूद नजरअंदाज किया गया। खान माफिया ने राजस्थान सरकार को गिरफ्त में ले लिया है। - **सतीश पूनिया,** प्रदेशाध्यक्ष, भाजपा

बाबा विजयदास का देहांत सरकार और माफियाओं के बीच सांठ-गांठ का परिणाम है। सरकार के विधायक ही राज्य के खनन मंत्री पर गंभीर आरोप लगा रहे हैं। इस मामले की सीबीआइ से जांच होनी चाहिए।

राज्यवर्धन राठौड़,
राष्ट्रीय प्रवक्ता, सांसद

सरकार की ढिलाई के कारण अवैध खनन करने वालों का दुस्साहस बढ़ रहा है। हिंदुओं की भावनाओं का ध्यान रखते हुए पवित्र पर्वतों को खनन से मुक्त रखती तो संत को आत्मदाह नहीं करना पड़ता।

वासुदेव देवनानी,
विधायक

भीम

आज़ादी का अमृत महोत्सव Regd

राजस्थान सरकार
राजस्व (ग्रुप–3) विभाग

क्रमांकः– प.6(355)राज–3/2021

जयपुर दिनांकः 21/03/22

जिला कलक्टर,
भरतपुर।

विषयः– बृज क्षेत्र में स्थित तहसील सीकरी (पूर्व में तहसील नगर) एवं पहाडी के धार्मिक महत्त्व की पहाड़ियों को सघन वृक्षारोपण के लिये वन विभाग को हस्तान्तरित करने एवं खनन गतिविधियों को प्रतिबंधित किये जाने बाबत।

संदर्भः– आपका पत्र क्रमांक 8897 दिनांक 12.10.2021 के क्रम में।

महोदय,

उपरोक्त विषय एवं सन्दर्भ में आपके प्रस्तावानुसार तहसील सीकरी के 07 राजस्व ग्रामों 662.25 हैक्ट. सिवायचक भूमि एवं तहसील पहाडी के 02 राजस्व ग्रामों की 87.19 हैक्ट. सिवायचक भूमि इस प्रकार कुल 749.44 हैक्ट. सिवायचक भूमि एवं तहसील पहाडी के ग्राम मूंगस्का के 04 खसरा नम्बरान की 7.96 हैक्ट. चारागाह भूमि का राजस्थान काश्तकारी (सरकारी) नियम, 1955 के नियम 7 के तहत वर्गीकरण परिवर्तन कर सघन वृक्षारोपण हेतु राजस्थान भू–राजस्व अधिनियम 1956 की धारा 102 के तहत डायवर्जन स्वरूप वन विभाग को **"उक्त हस्तांतरण वन विभाग के वन भूमि के स्वीकृत एवं विचाराधीन डायवर्जन प्रस्तावों, जिनके लिये भूमि आवंटित की जानी है एवं भविष्य में आने वाले डायवर्जन प्रस्तावों के लिये किये जाने की शर्त पर"** हस्तांतरण किये जाने एवं प्रस्तावित 7.96 हैक्ट. चारागाह भूमि की क्षतिपूर्ति हेतु ग्राम पंचायत मूंगस्का के राजस्व ग्राम खैराबा के कुल किता 8 रकबा 3.85 हैक्ट. एवं ग्राम बडौदा के कुल किता 21 रकबा 4.11 हैक्ट. इस प्रकार कुल किता 29 रकबा 7.96 हैक्ट. किस्म सिवायचक भूमि को चारागाह में दर्ज किये जाने की राजकीय स्वीकृति निर्देशानुसार एतदद्वारा प्रदान की जाती है।

भवदीय,

(विश्व मोहन शर्मा)
संयुक्त शासन सचिव

प्रतिलिपिः–

1. विशिष्ठ सहायक, मा0 राजस्व मंत्री महोदय
2. मास्टर गार्ड फाईल।
3. रक्षित पत्रावली

अनुभागाधिकारी

परम कल्याणकारी 'कृष्णावतार'

बाबाश्री द्वारा निःसृत श्रीभागवतसप्ताह कथा (२२/२/१९८५) से संकलित

निवृत्ततर्षैरुपगीयमानाद्
भवौषधाच्छ्रोत्रमनोऽभिरामात् ।
क उत्तमश्लोकगुणानुवादात्
पुमान् विरज्येत विना पशुघ्नात् ॥ (श्रीभागवतजी १०/१/४)

श्रीकृष्ण का चरित्र तीन प्रकार के लोग गाते हैं –

एक तो आत्माराम जीवन्मुक्त महापुरुष श्रीकृष्ण-यश का गान करते हैं; दूसरे 'मुमुक्षु जन' जो भवसागर से पार होना चाहते हैं, वे भी श्रीकृष्ण गुणगान करते हैं; तीसरे 'विषयी लोग' (जैसे आजकल सिनेमा के गायक-गायिकायें) भी श्रीकृष्ण-चरित्र को गाते हैं। श्रीकृष्ण का गुणगान किसी भी प्रकार से किया जाए, उससे मनुष्य का कल्याण ही होता है। परीक्षितजी 'श्रीशुकदेवजी' से कहते हैं – "हे गुरुदेव ! आप मुझे विस्तार से भगवान् श्रीकृष्ण का चरित्र सुनाइए, आपने 'बलरामजी' को रोहिणी का पुत्र बताया तथा देवकी का भी पुत्र बताया तो उनके दो माताएँ एक साथ कैसे थीं ? भगवान् श्रीकृष्ण अपने पिता वसुदेवजी का घर छोड़कर ब्रज में क्यों गये ? ब्रज में उन्होंने कौन-कौन सी लीलायें कीं, कितने दिन वहाँ रहे, ये सब आप मुझे बताइए। मैंने अन्न तो क्या जल का भी त्याग कर दिया है किन्तु मुझे भूख-प्यास बिलकुल भी नहीं सता रही है क्योंकि मैं आपके मुखकमल से झरती हुई भगवान् की परमामृतमयी लीला-कथा का पान कर रहा हूँ।"

सूतजी कहते हैं कि 'शुकदेवजी' राजा परीक्षित का प्रश्न सुनकर बहुत प्रसन्न हुए; इसके बाद उन्होंने भगवान् श्रीकृष्ण की लीलाओं का वर्णन करना प्रारम्भ किया। श्रीशुकदेवजी ने कहा – भगवान् श्रीकृष्ण की कथा के सम्बन्ध में प्रश्न करने से ही वक्ता, प्रश्न करने वाला और श्रोता तीनों ही पवित्र हो जाते हैं – जैसे गंगाजी का जल या भगवान् शालग्राम का चरणामृत सभी को पवित्र कर देता है – **वासुदेवकथाप्रश्नः पुरुषांस्त्रीन् पुनाति हि ।**
वक्तारं पृच्छकं श्रोतृंस्तत्पादसलिलं यथा ॥
(श्रीभागवतजी १०/१/१६)

एक बार लाखों दैत्यों के दल ने घमण्डी राजाओं का रूप धारण करके अपने पापों के भार से पृथ्वी को रौंद डाला था, उससे छूटने के लिए वह सुमेरु पर्वत पर ब्रह्माजी की शरण में गयी, उस समय पृथ्वी ने गाय का रूप धारण कर रखा था, ब्रह्माजी को उसने अपना सारा कष्ट सुनाया; उसके कष्ट को सुनकर 'श्रीब्रह्माजी' भगवान् शंकर, स्वर्ग के अन्य प्रमुख देवताओं तथा गौ रूपा पृथ्वी को लेकर क्षीरसागर के तट पर गये। वहाँ पहुँचकर ब्रह्मादि देवताओं ने भगवान् की स्तुति की। स्तुति करते-करते ब्रह्माजी को समाधि लग गयी, समाधि में ब्रह्माजी ने आकाशवाणी सुनी। भगवान् ने कहा – 'मैं पृथ्वी पर अवतार लूँगा, तब तक तुम लोग भी पृथ्वी पर यदुवंश में जन्म लो। देवताओं की स्त्रियाँ भी मेरी प्रियाजी की सेवा के लिए जन्म ग्रहण करें। सहस्रमुख शेषजी भी अवतार ग्रहण करेंगे, मेरी योगमाया भी अवतार लेगी।'

श्रीशुकदेवजी कहते हैं कि ब्रह्माजी ने आकाशवाणी के द्वारा जो कुछ सुना, वह सब देवताओं को बता दिया। मथुरा में भगवान् श्रीहरि नित्य विराजमान रहते हैं –

मथुरा भगवान् यत्र नित्यं संनिहितो हरिः ।
(श्रीभागवतजी १०/१/२८)

एकबार मथुरा में वसुदेवजी का देवकी के साथ विवाह हुआ। उस समय उग्रसेन का पुत्र 'कंस' जो अपनी चचेरी बहन देवकी से बहुत प्रेम करता था, रथ पर देवकी-वसुदेव को बैठाकर स्वयं ही रथ को हाँककर देवकी को विदा करने के लिए चला। देवकी के पिता 'देवक' कंस के चाचा थे। जब कंस इस प्रकार रथ को हाँक रहा था, उसी समय कंस को संबोधित करते हुए आकाशवाणी ने कहा – 'अरे मूर्ख ! जिसे तू रथ में बैठाकर ले जा रहा है, इसी देवकी का आठवाँ गर्भ तेरा काल होगा, वह तुझे मारने वाला होगा।' कंस बड़ा पापी था, आकाशवाणी सुनते ही उस दुष्ट ने देवकी के बाल पकड़ लिए और उसे मारने के लिए अपनी तलवार निकाल ली।

उस समय वसुदेवजी ने उससे कहा – 'राजकुमार ! आप तो अत्यन्त प्रशंसनीय गुणों वाले हैं। आप अपनी बहन को विवाह के शुभ अवसर पर क्यों मारते हैं ?' वसुदेवजी ने कंस को बहुत ज्ञान दिया, उन्होंने कहा – 'जैसे चलते समय मनुष्य एक पैर आगे जमा लेता है, तब दूसरा पैर उठाता है, उसी प्रकार जब शरीर का अन्त हो जाता है तो जीव दूसरे शरीर को ग्रहण करके तब अपने पहले शरीर को छोड़ता है। शरीर में अधिक राग करने से मनुष्य को उससे मोह हो जाता है और फिर उससे उसका नाश हो जाता है। **"द्रोग्धुर्वै परतो भयम्"** (श्रीभागवतजी १०/१/४४) इसलिए अपना कल्याण चाहने वाले मनुष्य को किसी से द्रोह नहीं करना चाहिए। क्योंकि द्रोह करने वाले को इस जीवन में तथा परलोक में भी भयभीत होना पड़ेगा।'

वसुदेवजी के समझाने पर भी कंस अपने निन्दित कर्म से पीछे नहीं हटा तब वसुदेवजी ने विचार किया कि बुद्धिमान मनुष्य को जहाँ तक हो सके मृत्यु को हटाने का प्रयत्न करना चाहिए। (सम्भव है इससे मृत्यु टल जाये अथवा मारने वाला ही स्वयं मर जाए।) उन्होंने कंस से कहा कि आपको देवकी से तो कोई भय नहीं है, भय इसके पुत्रों से है तो मैं इसके पुत्रों को लाकर आपको दे दूँगा। कंस ने वसुदेवजी की यह बात स्वीकार कर ली क्योंकि वह जानता था कि वसुदेवजी कभी झूठ नहीं बोलते हैं। समय आने पर देवकी के गर्भ से जो भी पुत्र होते, वे उसे लाकर कंस को सौंप देते थे। जब देवकी के पहला पुत्र हुआ तो उन्होंने उसे लाकर कंस को दे दिया। वसुदेवजी की ऐसी सत्य-निष्ठा को देखकर कंस बहुत प्रसन्न हुआ और बोला कि आप इस बालक को ले जाइये, मुझे तो आठवें बालक से भय है, आठवें बालक को ही आप मुझे दीजिएगा।

नारदजी ने विचार किया कि इस पापी कंस के पाप का घड़ा जब तक नहीं भरेगा, तब तक यह नहीं मरेगा। इसलिए नारदजी कंस के पास उसे उल्टा ज्ञान देने के लिए पहुँचे और बोले – 'ब्रज में रहने वाले नन्द आदि गोप, वृष्णिवंश के वसुदेव आदि यादव, देवकी आदि यदुवंश की स्त्रियाँ – ये सभी देवता हैं, दैत्यों को मारने के लिए उत्पन्न हुए हैं। देवकी के गर्भ से तो साक्षात् विष्णु भगवान् ही तुझे मारने के लिए आ रहे हैं।' जब इस प्रकार नारदजी ने कंस को भड़का दिया तो कंस ने देवकी-वसुदेव को हथकड़ी-बेड़ी से जकड़कर कैद में डाल दिया। कंस जानता था कि मैं पहले कालनेमि असुर था और विष्णु ने मुझे मार डाला था, इसलिए वह उनसे द्रोह करता था तथा उसने यदुवंशियों को भी बहुत सताया।

श्रीशुकदेवजी कहते हैं – जब कंस ने एक-एक करके देवकी के छः बालक मार डाले, तब देवकी के गर्भ में श्रीशेषजी पधारे। इधर भगवान् ने अपनी योगमाया को आदेश दिया – 'हे देवी ! तुम शेषजी को देवकी के गर्भ से खींचकर गोकुल में रोहिणीजी के गर्भ में स्थापित कर दो, तुम नन्दबाबा की पत्नी यशोदाजी के गर्भ से जन्म लेना। पृथ्वी में लोग तुम्हें दुर्गा, भद्रकाली, वैष्णवी, शारदा, अम्बिका आदि नामों से पुकारेंगे और तुम्हारी पूजा करेंगे।'

एक बात यहाँ भागवत के टीकाकार आचार्यों ने लिखी है जो भागवत में नहीं लिखी है। श्रीजीवगोस्वामीजी लिखते हैं – **प्रागेव श्रीवसुदेवाहितगर्भायाः**

श्रीरोहिण्याः पश्चाद्गोकुलं गतायाः।

पहले ही वसुदेवजी के द्वारा रोहिणीजी में गर्भ स्थापित किया जा चुका था, उसके बाद वह गोकुल गयीं थीं। इसके लिए जीव गोस्वामीजी ने हरिवंशपुराण का प्रमाण भी दिया है – "**सार्द्धरात्रे स्थितं गर्भं पातयन्ती रजस्वला।**

निद्रया सहसाविष्टा पपात धरणीतले ॥

योगमाया ने रोहिणीजी से कहा –

तामाह निद्रासम्विग्नां नैशे तमसि रोहिणीम्
कर्षणेनास्य गर्भस्य स्वर्गेम चाहितस्य वै।
सङ्कर्षणो नाम शुभे तव पुत्रो भविष्यति" ॥

'तुम्हारे गर्भ में संकर्षण (शेष जी) हैं।' रोहिणी के गर्भ में पहले से स्थापित बालक को योगमाया ने गायब कर दिया, यदि ऐसा न किया जाता तो अचानक ही यदि रोहिणीजी के पुत्र होता तो लोग शंका करते। यदि पहले से ही वसुदेवजी द्वारा रोहिणी में गर्भ स्थापित न किया जाता तो लोग संदेह करने लगते। किसी स्त्री के अचानक ही संतान

उत्पन्न हो जाए तो लोग शंका करेंगे कि पति तो साथ में है नहीं, फिर संतान कहाँ से उत्पन्न हो गयी। इसीलिए आचार्यों ने इस कथा के विषय में आवश्यक रूप से अपनी टीका में लिखा कि जब 'रोहिणीजी' नन्दबाबा के घर में गोकुल आयीं तो उनके पहले से ही गर्भ था, इस बात को यशोदाजी और नन्दबाबा जानते थे। उस गर्भ को योगमाया ने आकर गिरा दिया तथा देवकीजी के गर्भ में जो शेषजी थे, उन्हें लाकर रोहिणीजी के गर्भ में स्थापित कर दिया और फिर जब बलरामजी का जन्म हुआ तो किसी ने रोहिणीजी के प्रति शंका नहीं की। इसके बाद भगवान् देवकीजी के गर्भ में आये। कंस ने देवकीजी को देखा, तब वह मन ही मन सोचने लगा कि अभी तक तो देवकी इतनी रूपवती नहीं थी और न ही ऐसा विलक्षण तेज था जैसा अब है; अवश्य ही अब इसके गर्भ में मेरा शत्रु आ गया है।

देवकी के गर्भ में 'भगवान्' के आने से ब्रह्माजी, शंकर आदि समस्त देवता कंस के कारागार में आये और भगवान् की स्तुति करने लगे –

सत्यव्रतं सत्यपरं त्रिसत्यम्
सत्यस्य योनिं निहितं च सत्ये।
सत्यस्य सत्यमृतसत्यनेत्रम्
सत्यात्मकं त्वां शरणं प्रपन्नाः॥

(श्रीभागवतजी १०/२/२६)

हे सत्यसंकल्प ! सत्य ही आपकी प्राप्ति का साधन है। सृष्टि की उत्पत्ति, स्थिति और प्रलय में भी आप ही सत्य हैं। पृथ्वी, जल, तेज, वायु और आकाश – इन पाँच दृश्यमान सत्यों के आप ही कारण हैं और उनमें सत्यरूप से स्थित हैं, आप ही परमार्थ सत्य हैं। हे सत्यस्वरूप परमात्मा ! हम आपकी शरण में आये हैं।

इस स्तुति में भगवान् का नाम, उनका स्वरूप – सब कुछ सत्य ही बताया गया है अर्थात् सत्यनिष्ठ व्यक्ति को ही भगवान् मिलते हैं। बेईमान और झूठे व्यक्ति को भगवान् नहीं मिल सकते – **"पतन्त्यधोऽनादृतयुष्मदङ्घ्रयः"**

(श्रीभागवतजी १०/२/३२)

आपके चरणकमलों का आश्रय जो छोड़ देते हैं, वे ज्ञानी भी होंगे तब भी नष्ट हो जायेंगे –

तथा न ते माधव तावकाः क्वचिद्
भ्रश्यन्ति मार्गात्त्वयि बद्धसौहृदाः।
त्वयाभिगुप्ता विचरन्ति निर्भया
विनायकानीकपमूर्धसु प्रभो॥ (श्रीभागवतजी १०/२/३३)

आपके भक्त कभी भी अपने साधनमार्ग से गिरते नहीं हैं, वे बड़े-बड़े विघ्नों के, संकटों के उस पार चले जाते हैं।

"सत्त्वं विशुद्धं श्रयते भवान् स्थितौ"

(श्रीभागवतजी १०/२/३४)

आप संसार की स्थिति के लिए जो अवतार-विग्रह धारण करते हैं, वह विशुद्ध सत्त्वमय होता है। 'भगवान् का शरीर' हमारे जैसा नहीं होता है। यहाँ 'विशुद्ध सत्त्व' का अर्थ 'सतोगुण' नहीं लगाना चाहिए। आचार्यों ने लिखा है कि भगवान् का शरीर कैसा होता है ? वे लिखते हैं –

"ज्ञानमयं मायातीतं चिन्मयम्"

भगवान् का शरीर ज्ञानमय, चिन्मय और मायातीत है। इस प्रकार भगवान् की स्तुति करने के बाद देवताओं ने माता देवकी से कहा – "हे माता ! आपके गर्भ में तो भगवान् हैं, इसलिए आप घबराइए नहीं। कंस तो कुछ दिनों में मरने वाला है। आपका पुत्र यदुवंश की रक्षा करेगा।

श्रीशुकदेवजी कहते हैं कि ब्रह्मादि देवताओं ने भगवान् की इस प्रकार स्तुति की, इसके बाद वे वहाँ से चले गये।

अब समस्त शुभ गुणों से युक्त बहुत सुहावना समय आया, 'दिशाएँ' सुन्दर और प्रसन्न हो गयीं, पृथ्वी मंगलमयी हो गई। रात्रि के समय भी सरोवरों में कमल खिल रहे थे। परम पवित्र और शीतल-मंद-सुगंध वायु बहने लगी। भाद्रपद (भादों) मास की अष्टमी तिथि थी, सबके मन प्रसन्न हो गये। भगवान् के अवतार के समय स्वर्ग में देवता लोग दुन्दुभियाँ बजाने लगे, किन्नर और गन्धर्व मधुर स्वर में गाने लगे तथा अप्सराएँ नाचने लगीं, देवता और ऋषि-मुनि आनन्द से पुष्पों की वर्षा करने लगे, 'बादल' सागर के पास जाकर गरजने लगे मानो उससे कह रहे हों कि भगवान् आ रहे हैं, तुम्हारे भीतर द्वारिकापुरी बसाकर रहेंगे तो तुम्हें भी आनन्द मिलेगा।

वसुदेवनन्दन 'नन्दनन्दन' में विलीन

बाबाश्री द्वारा निःसृत श्रीभागवतसप्ताह कथा (२२/२/१९८५) से संकलित

मध्य रात्रि के समय 'भगवान्' देवकी के गर्भ से इस प्रकार प्रकट हुए जैसे पूर्व दिशा में पूर्णिमा का चन्द्रमा उदित हुआ हो। वसुदेवजी ने अपने सामने अत्यधिक सुन्दर चतुर्भुज बालक देखा तो वे स्तुति करने लगे।

वसुदेवजी ने कहा – प्रभो! आप अनुभव-आनन्द स्वरूप हैं। यह कंस बड़ा दुष्ट है, इसे जब मालूम हुआ कि आपका अवतार हमारे घर होने वाला है तो इसने आपके बड़े भाइयों को मार डाला। अभी अपने दूतों से आपके जन्म का समाचार सुनकर वह हाथ में शस्त्र लेकर दौड़ा आएगा और पता नहीं क्या-क्या करेगा?

इधर देवकीजी भी भगवान् की स्तुति करने लगीं – "प्रभो! आपकी माया को कौन जान सकता है? आप मेरे गर्भ में आये, यह तो आपकी विचित्र लीला है – **"नृलोकस्य विडम्बनम्"** आप अपने इस चतुर्भुज रूप को छिपा लीजिये, आपके लिए मैं कंस से बहुत डर रही हूँ।" भगवान् ने कहा – "स्वायम्भुव मन्वन्तर में जब आपका पहला जन्म हुआ था, उस समय आपका नाम था 'पृश्नि' और वसुदेव का नाम था 'सुतपा'। जब ब्रह्माजी ने आप दोनों को संतान उत्पन्न करने की आज्ञा दी, तब आप लोगों ने कठोर तप किया। घोर तप करते-करते दिव्य बारह हजार वर्ष बीत गये। उस समय मैं आप लोगों के सामने इसी रूप से प्रकट हुआ था। मैंने जब आप लोगों से वर माँगने को कहा तो मेरी माया से मोहित होने के कारण आपने मोक्ष नहीं माँगा, मेरे जैसा पुत्र माँगा। तब मैं आप दोनों का पुत्र बना और मेरा नाम हुआ – 'पृश्निगर्भ'। दूसरे जन्म में आप लोग अदिति और कश्यप बने, उस समय भी मैं आपका पुत्र बना, मेरा नाम था 'उपेन्द्र या वामन'। तीसरे जन्म में भी मैं अब आपका पुत्र बना हूँ। मैंने आपको अपना यह रूप इसलिए दिखाया जिससे कि पूर्व जन्मों का आपको स्मरण हो जाए।

श्रीशुकदेवजी कहते हैं – इतना कहकर भगवान् चुप हो गये और अपनी माया से उन्होंने एक प्राकृत शिशु का रूप धारण कर लिया और वसुदेवजी से कहा कि आप मुझे गोकुल में पहुँचा दीजिये। वहाँ ब्रज में श्रीजी की छत्रछाया में मुझे कंस से भय नहीं रहेगा।

श्यामसुंदर प्रकटलीला में जब गोकुल से नंदगाँव आ गये तो बरसाने के आसपास कंस नहीं आ सकता था। वसुदेवजी ने भगवान् श्रीकृष्ण की इच्छा से कारागृह के बाहर जाने के बारे में सोचा। उधर यशोदाजी के गर्भ से योगमाया का प्राकट्य हुआ। कंस के सभी द्वारपाल सो गये, ऐसा कैसे हुआ? विष्णुपुराण में लिखा है –

"मोहिताश्चाभवंस्तत्र रक्षिणो योगनिद्रया।"

योगमाया के प्रभाव से सैकड़ों प्रहरी जो हाथों में हथियार लेकर पहरा दे रहे थे, वे सब के सब सो गये। कंस की जेल में बड़े-बड़े द्वार थे, वे दुरत्यय थे, उनके दरवाजे बन्द थे, भागवत के टीकाकार लिखते हैं कि दरवाजे किस प्रकार बंद थे? केवल साँकर, कुंडा-ताला से दरवाजे बंद नहीं थे; वे मन्त्र से जकड़े हुए थे, ऐसी विषाक्त औषधियों का उन पर लेप किया गया था कि उनको छूते ही मनुष्य की मृत्यु हो जाती थी, इसीलिए इन्हें दुरत्यय कहा गया। कोई भी सेना अस्त्र-शस्त्रों के प्रहार से बंदीगृह के दरवाजों को तोड़ नहीं सकती थी। सेना अस्त्र-शस्त्र से लड़ सकती है किन्तु मन्त्र से नहीं लड़ सकती, यह एक विचित्र बात है। कंस ने बड़े-बड़े मन्त्र-तन्त्रों द्वारा कारागार के दरवाजों को बंद कराकर, उन पर अत्यन्त विषाक्त औषधियों का लेप करवा दिया था – **"मन्त्रौषधादिभिर्दुरत्ययाः सर्वा द्वारश्च बृहत्कपाटायसकीलशृङ्खलैः"** – (श्रीविजयध्वजतीर्थजी) इसीलिए भागवतजी (१०/३/४८) में इन दरवाजों के बारे में लिखा है – **'दुरत्यया'** दुरत्यय दरवाजे थे, उनके किवाड़ों को कोई छू भी नहीं सकता था, तोड़ना तो दूर रहा।

श्रीकृष्ण ने वसुदेवजी से कहा कि आप कारागृह के बाहर चले जाइये, ये सब दरवाजे अपने-आप खुल जायेंगे। अपनी गोद में श्रीकृष्ण को लेकर वसुदेवजी दरवाजे के पास पहुँचे, वसुदेवजी कैसे हैं तो शुकदेवजी कहते हैं – **'कृष्णवाहे'** जो कृष्ण को ले जा रहे थे। वसुदेवजी 'कृष्ण' को गोद में लेकर जैसे ही दरवाजे के निकट पहुँचे, वैसे ही वे सब दरवाजे, उनके ताले, जंजीरें, किवाड़ें आदि अपने आप ही खुल गये। बड़े-बड़े मन्त्र-तन्त्र, कवच और विषाक्त औषधियों का प्रभाव समाप्त हो गया जैसे सूर्योदय होने पर अन्धकार स्वयं ही हट

जाता है, सूर्यदेव अन्धकार को हटाने के लिए बुहारी नहीं लगाते हैं।

उसी समय वर्षा होने लगी, क्यों होने लगी ? योगमाया ने ऐसा नाटक इसलिए रचा जिससे कि वर्षा के कारण कोई घर के बाहर न जाये, किसी को पता न लग जाए कि वसुदेवजी अपने बालक को लेकर कहीं और रख आये। उस समय भगवान् शेषजी अपने सहस्र फनों से भगवान् के ऊपर छाया करते हुए, वर्षा के जल से उनको बचाते हुए उनके पीछे-पीछे चलने लगे, बड़े जोर से वर्षा हो रही थी। 'यमुनाजी' यमानुजा (यमराज की बहन) के स्वरूप में आ गयीं थीं, उनके जल में भयंकर बाढ़ आ रही थी। विष्णुपुराण में लिखा है –

"वर्षतां जलदानां च तोयमत्युल्बणं निशि।"

वर्षा भी साधारण नहीं हो रही थी, 'मूसलाधार वर्षा' जिसमें जल की मोटी-मोटी धाराएँ तीव्र वेग से गिर रहीं थीं। इस भयंकर वर्षा के कारण घर से बाहर निकलना तो दूर, कोई अपनी खिड़की से भी बाहर नहीं झाँक सका। यमुनाजी में सैकड़ों भयानक भँवरें पड़ रही थीं। ऐसे में शेषजी अपने फनों के द्वारा वर्षा के जल से प्रभु को बचाते हुए उनके पीछे-पीछे चल रहे थे, साथ ही वसुदेवजी को भी उन्होंने अपने फनों की छाया से ढक रखा था। भयंकर वर्षा की एक बूंद भी भगवान् और वसुदेवजी के ऊपर नहीं पड़ी। यमुनाजी में इतने भीषण वेग से जल प्रवाहित हो रहा था कि हाथी भी बह जाये। यमुना की लहरों के फेन में झाग इस प्रकार निकल रहा था जैसे दूध में उबाल आ रहा हो, झाग ऊपर तक जा रहे थे। इसीलिए भागवतजी के श्लोक १०/३/५० में यमुना को यमानुजा अर्थात् यमराज की बहन की संज्ञा दी गयी है किन्तु जिस प्रकार समुद्र ने भगवान् राम को मार्ग दे दिया, उसी प्रकार यमुनाजी ने भी मार्ग दे दिया। ब्रजवासी ऐसा कहते हैं कि भयंकर लहरों के माध्यम से यमुनाजी 'श्रीकृष्ण के चरण' स्पर्श करना चाह रहीं थीं। जब यमुनाजी का जल ऊपर बढ़ने लगा तो वसुदेवजी घबरा गये और समझ गये कि अब तो मैं डूब जाऊँगा किन्तु यमुनाजी नहीं मान रहीं थीं, वे कह रहीं थीं कि मेरे कान्त (प्रियतम) मेरे जल के ऊपर से होकर जा रहे हैं तो मैं इनका चरण तो अवश्य ही स्पर्श करूँगी। यह स्वाभाविक भी है क्योंकि प्रभु आयें और उनका चरण स्पर्श न करे, ऐसा कौन है ? यमुनाजी श्रीकृष्ण चरण स्पर्श करने के लिए जोर से उछलीं तो वसुदेवजी को लगा कि अब तो मैं और मेरा बालक दोनों ही डूब जायेंगे तो वे जोर से चिल्लाये – 'कोई ले...कोई ले' अर्थात् कोई मेरे बालक को बचा ले। वसुदेवजी के इस प्रकार 'कोई ले' कहने से वहाँ यमुना तट पर 'कोयलो' नामक एक गाँव बस गया है; यमुनाजी के किनारे एक छोटा-सा मन्दिर है, उसमें बालकृष्ण को ले जाते हुए वसुदेवजी की प्रतिमा है।

(***श्रीबाबामहाराज के शब्दों में*** – एकबार ब्रज-परिक्रमा करते समय मैं भी उस स्थान पर पहुँचा और रात को सो गया तो बहुत सुन्दर स्वप्न दिखाई पड़ा। स्वप्न में मुझे यमुनाजी का दर्शन हुआ, यह लीलास्थल का प्रभाव है। स्वप्न में यमुनाजी का बहुत बड़ा वेग दिखाई दिया जबकि उस समय गर्मियों का मौसम था, यमुनाजी में अधिक जल नहीं था। स्वप्न देखकर मैंने विचार किया कि यह वही स्थान है जहाँ 'यमुनाजी' श्रीकृष्णचरण-स्पर्श के लिए बड़े वेग से ऊपर उठीं थीं और अपने बालक को बचाने के लिए वसुदेवजी – 'कोई लो...कोई लो' कहकर चिल्लाये थे। यमुनाजी ने मुझ पर दया करके इस तरह स्वप्न में दर्शन दिया।) यमुनाजी के जल को ऊपर उठते देख श्यामसुंदर समझ गये कि ये बिना मेरे चरण स्पर्श किये नहीं मानेंगी और मेरे पिता वसुदेवजी घबरा रहे हैं तो उन्होंने अपने चरण नीचे लटका दिए और यमुनाजी ने प्रभु के चरण स्पर्श कर लिए और फिर **"मार्गं ददौ सिन्धुरिव श्रियः पतेः"** (श्रीभागवतजी १०/३/५०) जैसे सीतापति भगवान् श्रीराम को समुद्र ने मार्ग दे दिया था, वैसे ही यमुनाजी ने भी प्रभु को मार्ग दे दिया। इसके बाद 'वसुदेवजी' नन्दबाबा के गोकुल में पहुँचे तो देखा कि वहाँ सभी लोग गहरी निद्रा में अचेत पड़े हुए हैं। उन्होंने यशोदाजी की शैय्या पर अपने बालक को लिटा दिया और यशोदाजी की कन्या को लेकर मथुरा के बंदीगृह में लौट आये। जेल के अन्दर प्रवेश करते ही किवाड़ें अपने आप बंद हो गयीं, ताले लग गये; मन्त्र-तन्त्र और औषधियों का उन पर पहले जैसा प्रभाव हो गया।

'अरे भाई! भगवान् से मिलने के लिए तुम मनुष्य बने हो।'

कंस का काल 'कृष्ण'

बाबाश्री द्वारा निःसृत श्रीभागवतसप्ताह कथा (२२/२/१९८५) से संकलित

वसुदेवजी के बंदीगृह के भीतर प्रवेश करने और दरवाजों के अपने आप बंद होने के बाद द्वारपालों की नींद टूटी और वे खड़े हो गये। उनको यह पता ही नहीं पड़ा कि हम लोग कब सोये और वसुदेवजी कब बाहर निकले व भीतर आ गये। वे तो यही सोच हे थे कि हम लोग बहुत बढ़िया पहरा दे रहे हैं और मक्खी तक जेल के भीतर नहीं घुस सकती। द्वारपाल अपने हाथों में हथियार लेकर आवाज लगाने लगे – 'सावधान, होशियार।' इसके बाद वसुदेवजी के द्वारा लायी हुई बालिका बड़े जोर से रोने लगी। उसके रोने की ध्वनि सुनकर द्वारपाल दौड़कर कंस के पास गये क्योंकि कंस ने उन्हें आज्ञा दे रखी थी कि जैसे ही शिशु का जन्म हो तुरंत उसी समय मुझे खबर करना नहीं तो सबका सिर काट दिया जाएगा। इसीलिए द्वारपालों ने कंस से कहा – 'महाराज ! सावधान हो जाइये, आपके काल ने जन्म ले लिया है।' कंस को नींद तो नहीं आ रही थी, वह तो इसी बात की प्रतीक्षा कर रहा था; बालक के जन्म का समाचार पाते ही वह बड़े जोर से कारागृह की ओर चला, हड़बड़ाहट में वह धरती पर गिर पड़ा, उसके बाल बिखर गये, शीघ्रता से वह देवकीजी के पास पहुँचा। उसे देखकर देवकीजी ने कहा – 'भैया ! यह तो कन्या है, तुम्हारी पुत्रवधू के समान है। तुमने मेरे सभी बालक मार डाले। अब केवल यही एक कन्या बची है, इसे तो मुझे दे दो।' श्रीशुकदेवजी कहते हैं – देवकीजी ने कन्या को अपनी गोद में चिपका लिया और बड़ी ही दीनता के साथ रोते हुए उन्होंने कंस से उस कन्या को छोड़ देने की प्रार्थना की किन्तु कंस बड़ा दुष्ट था। उसने देवकी को झिड़ककर उनके हाथ से वह कन्या छीन ली। उस कन्या के पैर पकड़कर उसने बड़े जोर से एक चट्टान पर उसे दे मारा परन्तु वह कोई साधारण कन्या तो थी नहीं, वह तो देवी थी, वह कंस के हाथ से छूटकर तुरन्त ही आकाश में चली गयी। श्रीमद्भागवत में तो इतना ही लिखा है कि वह कन्या कंस के हाथ से छूटकर आकाश में चली गयी किन्तु भविष्योत्तरपुराण में लिखा है –

"कंसासुरस्योत्तमांगे पादं दत्वा गता दिवम्"

कन्या ने आकाश में जाते-जाते कंस की खोपड़ी पर इतनी तेजी से अपने पाँव से प्रहार किया कि वह धड़ाम से नीचे गिर पड़ा। जब कंस गिर पड़ा तो वह चारों ओर देखने लगा कि मेरे सिर पर इतनी तेजी से प्रहार किसने किया, यहाँ तो ऐसा कोई मनुष्य है नहीं जो मेरे भय से मेरे सामने अपना सिर भी उठा सके तो मुझे मारा किसने ? क्रोध में वह इधर-उधर देखने लगा तो उसकी दृष्टि आकाश पर गयी, उसने देखा कि अष्टभुजा देवी आकाश में खड़ी हैं जिनके हाथों में धनुष, त्रिशूल, बाण, ढाल, तलवार, शंख, चक्र और गदा थे। बड़े-बड़े सिद्ध, चारण, गन्धर्व और अप्सरा देवी माँ की स्तुति कर रहे थे। उस समय देवी ने कंस से कहा – 'अरे मूर्ख ! मुझे मारने से तुझे क्या मिलेगा ? तेरा काल तो पैदा हो चुका है, वह तो तेरा पुराना वैरी है। अब तू व्यर्थ में बालकों की हत्या मत किया कर।' कंस से इस प्रकार कहकर देवी अन्तर्धान हो गयीं। कंस आँख खोलकर देखता ही रह गया कि यह क्या हो गया ? उसको बड़ा आश्चर्य हुआ। उसने उसी समय देवकी और वसुदेव के हथकड़ियों और बेड़ियों को खोला तथा उन्हें कैद से मुक्त कर दिया। उसने मन में सोचा कि मेरा काल तो कहीं और पैदा हुआ है, फिर भी मैंने व्यर्थ देवकी-वसुदेव को कष्ट पहुँचाया। देवताओं ने मुझे खूब मूर्ख बनाया, आकाशवाणी के माध्यम से कहा कि तेरी बहन का आठवाँ गर्भ तुझे मारेगा किन्तु ऐसा तो हुआ नहीं। बड़े ही दुःख की बात है, देवताओं ने मुझे बड़ा धोखा दिया और मैंने अपनी निरपराध बहन के बच्चों को मार डाला। इस तरह मन में दुःखी होकर वह देवकी और वसुदेव को ज्ञान देने लगा और बड़ी विनम्रता से बोला – 'अरी बहन और जीजाजी !' (अब वसुदेवजी को 'जीजाजी' कह रहा है क्योंकि उनका साला है। इसीलिए ब्रज में 'साला' शब्द

गाली के लिए प्रयुक्त होता है। ब्रजवासी कहते हैं – साला, जाने कहाँ से चला आया ? 'साला' या ब्रज में 'सारा' भी कहते हैं, यह गाली इसीलिए चली है क्योंकि साले के ऐसे ही काम होते हैं। ब्रजवासी किसी पर नाराज होते हैं तो कहते हैं – सारे, दे दऊँगो अभी तोकूँ अर्थात् साले अभी तुझे मारूँगा ।) इसीलिए साला होने के कारण कंस 'वसुदेवजी' से कहता है – 'अरे जीजाजी ! मैं बड़ा पापी हूँ, मैं तो क्रूर असुर हूँ, ब्रह्महत्यारे की तरह मैं जीवित होने पर भी मुर्दा हूँ। ये देवता भी बड़ा झूठ बोलते हैं, केवल मनुष्य ही झूठ नहीं बोलते। उन्हीं पर विश्वास करके मैंने अपनी बहिन के बच्चे मार डाले। पता नहीं, अब मुझे किस लोक में जाना पड़ेगा ? अपने पुत्रों के लिए तुम दोनों शोक मत करो। कोई किसी को दुःख नहीं देता, अपने ही कर्म का फल भोगना पड़ता है। तुम्हारे पुत्रों को भी अपने ही कर्म का फल मिला है। सभी प्राणी सदा एक साथ नहीं रह सकते, वे दैव के अधीन हैं, जैसे मिट्टी के बने हुए पदार्थ बनते-बिगड़ते रहते हैं परन्तु मिट्टी में कोई परिवर्तन नहीं होता, वैसे ही शरीर तो पैदा होता और मर जाता है किन्तु आत्मा पर उसका कोई प्रभाव नहीं पड़ता।'

इस प्रकार कंस 'देवकी और वसुदेव' को वेदान्त की बातें बताकर समझाने लगा। इसके बाद उसने उनके चरण पकड़ लिए और उनसे क्षमा माँगने लगा। उसने उन दोनों को कारागार से छोड़ दिया। देवकीजी ने देखा कि कंस को अपने पापों का पश्चात्ताप हो रहा है तो उन्होंने उसे क्षमा कर दिया – **"क्षान्त्वा रोषं च देवकी "** उन्होंने सोचा कि यह मेरा भाई ही तो है और इसकी गलती भी क्या है, यह तो आकाशवाणी की ही गलती थी, जो इसे गलत सूचना दी।

श्रीशुकदेवजी कहते हैं – प्रसन्न होकर देवकी-वसुदेव ने निष्कपट भाव से कंस के साथ बातचीत की, तब वह उनसे अनुमति लेकर अपने महल में चला गया। रात भर उसे नींद नहीं आई, वह सोचने लगा कि अब समस्या यह आ गयी है कि मेरा काल पैदा हो गया है किन्तु वह कहाँ है, इसका कोई पता नहीं है। सबेरे कंस ने अपने मंत्रियों को बुलाया। उसके बुलाने पर सभी विभागों के बड़े-बड़े मंत्री आये। देवी ने कंस से जो कुछ कहा था, वह सब उसने अपने मंत्रियों को बताया। दैत्य स्वभाव के वे मंत्री बोले – 'महाराज ! दस दिन के आगे-पीछे जितने भी बच्चे हुए हों, उन सबको मार डालना चाहिए। उस देवी ने यही तो कहा है कि काल अभी ही पैदा हुआ है तो उसका सीधा उपाय यही है।' कंस बोला – 'हाँ, ये बात तो सही है।' मंत्रियों ने कहा – 'आप देवताओं से क्यों आशंकित हैं, ये देवता तो बड़े ही डरपोक हैं। वे तो आपके धनुष की टंकार सुनकर ही घबरा जाते हैं। हमें उनसे कोई भय नहीं है। विष्णु तो एकांत में पड़ा रहता है, शंकर वनवासी है। इन्द्र बेचारे में तो कोई ताकत ही नहीं है, ब्रह्मा बूढ़ा हो चुका है, वह सदा तपस्या करता रहता है। ऐसी स्थिति में युद्ध में आपका सामना करने वाला तो कोई है ही नहीं। फिर भी देवता हमारे शत्रु हैं, इसलिए उनकी उपेक्षा नहीं करनी चाहिए। हमें उनकी जड़ ही उखाड़ फेंकनी चाहिए। देवताओं की जड़ है 'विष्णु' तथा विष्णु की जड़ है 'सनातन-धर्म' और सनातन-धर्म की जड़ है – वेद, गौ, ब्राह्मण और 'साधु' जो भजन करते हैं; इन्हीं से विष्णु पुष्ट होता है।'

विप्रा गावश्च वेदाश्च तपः सत्यं दमः शमः।
श्रद्धा दया तितिक्षा च क्रतवश्च हरेस्तनूः ॥

(श्रीभागवतजी १०/४/४१)

ब्राह्मण, गाय, वेद, तपस्या, सत्य, इन्द्रिय दमन, मनोनिग्रह, श्रद्धा, दया, तितिक्षा और यज्ञ विष्णु के शरीर हैं। इसलिए हम लोग ब्राह्मण, तपस्वी, याज्ञिक और गायों का सब प्रकार से विनाश कर डालेंगे। जब जड़ ही नहीं रहेगी तो पेड़ कहाँ से होगा ?

श्रीशुकदेवजी कहते हैं –

"ब्रह्महिंसां हितं मेने" (श्रीभागवतजी १०/४/४३)

दुष्ट मंत्रियों की सलाह से कंस की बुद्धि ऐसी विपरीत हो गयी कि उसने हिंसा करना ही ठीक समझा, उसने राक्षसों को संत पुरुषों की हिंसा करने का आदेश दे दिया; इच्छानुसार रूप धारण करने वाले जितने भी असुर थे, वे संसार में सभी को कष्ट देने लगे।

ब्रजवासी-वल्लभ 'ब्रजनन्दन'

बाबाश्री द्वारा निःसृत श्रीभागवतसप्ताह कथा (२२/२/१९८५) से संकलित

आयुः श्रियं यशो धर्मं लोकानाशिष एव च ।
हन्ति श्रेयांसि सर्वाणि पुंसो महदतिक्रमः ॥

(श्रीभागवतजी १०/४/४६)

जो 'महापुरुषों, भक्तों, साधुओं' का अपमान करता है, उसकी आयु, श्री, यश, धर्म, लोक-परलोक, विषय-भोग और कल्याण के सब साधन नष्ट हो जाते हैं। कंस और उसके अनुयायी असुर संतों-महापुरुषों का अनिष्ट करने में लग गये, इसलिए उनका शीघ्र ही नाश हुआ, उनकी मृत्यु समीप ही आ गयी थी, इसीलिए उन्होंने संतों से द्वेष किया। श्रीशुकदेवजी कहते हैं –

नन्दस्त्वात्मज उत्पन्ने जाताह्लादो महामनाः ।
आहूय विप्रान् वेदज्ञान् स्नातः शुचिरलङ्कृतः ॥

(श्रीभागवतजी १०/५/१)

'नन्दबाबा' पुत्र का जन्म होने पर आनन्द से भर गये। उन्होंने स्नान करके वस्त्राभूषण धारण किये तथा वेदों के जानकार ब्राह्मणों को बुलाया।

यह पहले ही बताया जा चुका है कि देवमीढजी की दो पत्नियाँ थीं, उनकी एक पत्नी तो क्षत्राणी थी और दूसरी पत्नी वैश्यानी (वैश्य कन्या) थी। क्षत्राणी स्त्री से तो शूरसेनजी उत्पन्न हुए और वैश्यानी से परजन्यजी का जन्म हुआ। वसुदेवजी के पिता और नन्दबाबा के पिता सौतेले भाई थे। शूरसेन के पुत्र हुए वसुदेव तथा परजन्य के पुत्र हुए नन्दबाबा, ये भी भाई-भाई हुए। जब दोनों के पिता आपस में भाई थे तो उनके पुत्र भी भाई कहलायेंगे। वसुदेव के भी पुत्र कृष्ण थे और नन्दबाबा के भी पुत्र कृष्ण थे। महापुरुषों के पदों में कहीं-कहीं तो ऐसा वर्णन मिलता है कि नन्दबाबा पाँच भाई थे और कुछ पदों में ऐसा वर्णन मिलता है कि नन्दबाबा आपस में नौ भाई थे; दोनों प्रकार के पद मिलते हैं। परजन्यजी की भी दो पत्नियाँ थीं। एक पत्नी के पाँच पुत्र थे और दूसरी पत्नी के चार पुत्र थे। नन्दबाबा की माता वरीयसीजी के पाँच पुत्र थे – उपनन्द, नन्द, अभिनन्द, सुनन्द और नन्दन; इनके अतिरिक्त परजन्यजी की दूसरी पत्नी के चार पुत्र अलग थे; ये सब मिलाकर नौ नन्द हुए। इन नौ नन्दों में नन्दबाबा सबसे अधिक बड़भागी थे क्योंकि नंदबाबा के पिता परजन्यजी पहले संतानहीन थे। एक दिन उनके पास नारदजी आये और उनसे परजन्यजी ने उपासना सीखी। नारदजी ने इनसे कहा – 'तुम भगवान् नारायण की उपासना करो तो तुमको शीघ्र ही सन्तान का लाभ होगा।' इसलिए नारदजी की कृपा से परजन्यजी को शीघ्र ही उपासना में सिद्धि प्राप्त हुई। एक दिन वे भजन करने बैठे थे तो आकाशवाणी हुई कि तुम्हें सन्तान की प्राप्ति होगी। तुम्हारे पाँच पुत्र होंगे, उनमें से एक के साक्षात् परब्रह्म ही पुत्र बनेंगे। इसलिए यह भी एक प्रमाण है कि नन्दजी के घर पुत्र के रूप में श्रीकृष्ण का जन्म हुआ क्योंकि आकाशवाणी मिथ्या नहीं हो सकती, वह भगवद्-वाणी है। इस प्रकार से यह इतिहास महापुरुषों ने लिखा है। नन्दबाबा के घर पुत्र रूप से श्रीकृष्ण का जन्म हुआ, इसके कई प्रमाण हैं। आदिपुराण में ऐसा उल्लेख है –

"नन्दपत्न्यां यशोदायां मिथुनं समजायत्"

नन्दपत्नी यशोदाजी के केवल कन्या ही नहीं उत्पन्न हुई थी, एक कन्या और एक पुत्र दोनों उत्पन्न हुए थे –

"गोविन्दाख्या पुमान् कन्याह्यम्बिका मथुरां गता"

जो पुत्र था, वह गोविन्द था, नन्द लाला था और जो कन्या थी, वह मथुरा चली गयी। जब वसुदेवजी देवकीनन्दन को ले आये तो वे नन्दनन्दन में लीन हो गये जैसे बादल में दामिनी (बिजली) लीन हो जाती है और अक्रूरजी के आने पर वसुदेवनन्दन मथुरा और द्वारका लीला करने चले गये। नन्दनन्दन नित्य रूप से ब्रज में लीला करते हैं, प्रकट लीला में अवश्य विरह भी होता है। इसीलिए ब्रजवासी गाते हैं कि श्रीकृष्ण ने यह सौगन्ध ली थी कि मैं ब्रज को छोड़कर कहीं भी नहीं जाऊँगा।

ब्रजवासी वल्लभ सदा, मेरे जीवन प्रान ।
ब्रज तजि अनत न जाइहौं, मोहे नंदबाबा की आन ॥
भूतल भार उतारिहौं, धरि-धरि रूप अनेक ।

ऐसा महात्माओं ने लिखा है, यह सब सही है। टीकाकार आचार्यों ने लिखा है कि स्वयं भागवत में ही इसके प्रमाण हैं कि श्रीकृष्ण नन्द बाबा के पुत्र थे जैसे कि १०/५/१ में शुकदेवजी ने कहा – **"नन्दस्त्वात्मज"** अर्थात् नन्दस्तु आत्मज – इसमें 'तु' शब्द है। इसका अर्थ हुआ कि नन्द के भी तो पुत्र हुआ। 'तु' माने तो। भागवत में 'तु' का बड़ा महत्व है। जैसे प्रथम स्कन्ध में कहा गया –

"कृष्णस्तु भगवान् स्वयम्" (श्रीभागवतजी १/३/२८)

भागवत में 'तु' का विशेष प्रयोग है, आचार्य लोग लिखते हैं कि 'नन्दस्त्वात्मज' – 'नन्दस्तु आत्मज' 'तु' का तात्पर्य है कि नन्द के घर में भी पुत्रोत्पत्ति हुई है, अब देवकीनन्दन और यशोदानन्दन में अन्तर यह है कि नन्दबाबा के यहाँ पर – **'सम्पूर्णवात्सल्यवैशिष्ट्यात्मरत्त्वम्'** यशोदानन्दन तो सम्पूर्ण वात्सल्य से युक्त हैं, केवल यहाँ शुद्ध वात्सल्य प्रेम है; नन्द-यशोदा 'श्रीकृष्ण' को केवल अपना पुत्र ही मानते हैं, उनमें भगवद्भाव नहीं रखते हैं किन्तु मथुरा में **'देवकीवसुदेवयोः ऐश्वर्यज्ञानाच्छन्नम्'**

देवकी-वसुदेव 'श्रीकृष्ण' को केवल अपना पुत्र ही नहीं मानते हैं, उनको यह भी प्रतीति होती है कि ये भगवान् हैं। अतः यशोदानन्दन और देवकीनन्दन में यह रस-सम्बन्धी अन्तर है। टीकाकार आचार्य कहते हैं कि यदि तुम ऐसा नहीं मानोगे तो भागवत में कई जगह जो शब्द आये हैं – आत्मज (बेटा), वे सब कैसे सच होंगे ? जैसे जब श्रीकृष्ण के नामकरण संस्कार के अवसर पर गर्गाचार्यजी आये तो उन्होंने कहा –

"प्रागयं वसुदेवस्य क्वचिज्जातस्तवात्मजः"

(श्रीभागवतजी १०/८/१४)

उन्होंने यहाँ 'तवात्मज' शब्द कहा है अर्थात् हे नन्दबाबा ! यह जो तुम्हारा निजी (तुम्हारे द्वारा उत्पन्न) पुत्र है, यह कभी पहले वसुदेवजी के यहाँ उत्पन्न हो चुका है। इसी प्रकार ब्रह्ममोह-लीला में ब्रह्माजी गोपालजी की स्तुति में कहते हैं –

नौमीड्य तेऽभ्रवपुषे तडिदम्बराय गुञ्जावतंसपरिपिच्छलसन्मुखाय।
वन्यस्रजे कवलवेत्रविषाणवेणु लक्ष्मश्रिये मृदुपदे पशुपाङ्गजाय॥ (श्रीभागवतजी १०/१४/१)

इस श्लोक में अंत में ब्रह्माजी ने श्रीकृष्ण को पशुपाङ्गज कहा है। ब्रह्माजी की बात झूठी नहीं हो सकती। पशुप किसे कहते हैं ? 'पशुप' माने ग्वारिया नन्दबाबा। "पशुः पालयति इति पशुपः" जो पशुओं का पालन करता है, उसे 'पशुप' कहते हैं; नन्दबाबा गायों का पालन करते थे, इसलिए उन्हें 'पशुप' कहा गया। यदि यह कहा जाए कि वसुदेवजी अपने पुत्र को यशोदाजी के पास लिटा आये इसलिए वे नन्द-यशोदा के पुत्र भी कहलाये तो नहीं, ब्रह्माजी कहते हैं – 'पशुपाङ्गज' अर्थात् नन्दबाबा के अंगज हैं 'श्रीकृष्ण'। 'अंगज' अर्थात् नन्दबाबा के अंग से उत्पन्न हैं, यह बात बहुत ध्यान से समझने योग्य है; इसे केवल आचार्यों ने ही लिखा है, हम लोग इसे सामान्य तरीके से नहीं जान सकते हैं; यह रहस्य तो आचार्यों ने ही खोला है। इसलिए जब ब्रह्माजी ने गोपाल को 'पशुपाङ्गजाय' कहा अर्थात् वे नन्द के अंग से उत्पन्न हैं, इसका मतलब यही है कि नन्द-यशोदा के अंग से उत्पन्न हुए बालक हैं, तभी तो 'अंगज' कहा जायेगा। अगर श्यामसुंदर वसुदेव के पुत्र होते, जैसा कि दुनिया के लोग यही जानते हैं कि वसुदेवजी अपने बालक को नन्दबाबा के घर में लिटा आये अर्थात् यही कृष्ण केवल वसुदेवजी के ही पुत्र होते तो ब्रह्माजी उन्हें 'पशुपाङ्गज' अर्थात् नन्दबाबा के अंगज क्यों कहते, 'अंगज' का अर्थ हुआ कि नन्द-यशोदा के शरीर से उत्पन्न हुए। इसका आशय यही हुआ कि यशोदाजी के भी एक बालक उत्पन्न हुआ था, उसी में वसुदेव के पुत्र आकर लीन हो गये। भागवत में ऊखलबन्धनलीला के प्रसंग में भी शुकदेवजी ने कहा है – **नायं सुखापो भगवान् देहिनां गोपिकासुतः।**

(श्रीभागवतजी १०/९/२१)

यह गोपिका सुत है, 'सुत' उसे कहते हैं, जिसे माता प्रसव के द्वारा उत्पन्न करती है। 'गोपिका-सुत' का अर्थ हुआ कि गोपी यशोदा ने इसे प्रसव के द्वारा जन्म दिया है। जब गोपी 'यशोदाजी' कन्हैया को जन्म देंगी तभी तो वे 'गोपिकसुत' कहे जायेंगे। इसी प्रकार जब कंस के हाथ से छूटकर बालिका आकाश में चली गयी तो उसके बारे में शुकदेवजी ने कहा – **"अदृश्यतानुजा विष्णोः"** (श्रीभागवतजी १०/४/९)

यह विष्णु (कृष्ण) की अनुजा है अर्थात् वह नन्दलाला की अनुजा थी, 'अनुजा' माने पीछे पैदा होने वाली उसी गर्भ से।

ऐसे विशुद्ध सन्त के सत्संग की आवश्यकता होती है जो स्मृति को जगा दे।

यशुमति-सुत 'बालकृष्णलाल'

बाबाश्री द्वारा निःसृत श्रीभागवतसप्ताह कथा (२२/२/१९८५) से संकलित

एक ही माता के गर्भ से जो पहले पैदा होता है, उसे 'अग्रज' कहते हैं और जो बाद में पैदा होता है उसे 'अनुज' कहते हैं। **'अग्रं जायते अग्रजः पश्चात् जायते अनुजः'** स्त्रीलिंग में – **'पश्चात् जायते अनुजा सा'** अतः नंदलाला के साथ कोई कन्या भी हुई तभी तो उसे 'अनुजा' कहा जाएगा। अगर 'कृष्ण' वसुदेव के पुत्र होते और यशोदाजी के केवल कन्या पैदा होती तो वह 'कन्या' कृष्ण की अनुजा नहीं हो सकती। क्योंकि यशोदा की कूँख दूसरी है और देवकी की भी कूँख अलग है। अतः यशोदाजी के गर्भ से जो कन्या हुई, वह देवकीजी के गर्भ से उत्पन्न होने वाले देवकीनन्दन कृष्ण की अनुजा कैसे हो सकती है ? यह प्रमाण भी भागवत के टीकाकार आचार्यों ने दिया है। रसिक महापुरुष भी लिखते हैं, जैसा कि श्रीहरिराम व्यासजी ने लिखा है – **जद्यपि कान्ह कुँवर की भगिनी, यशुदा माँ ने जाई।**

कान्ह कुँवर की भगिनी अर्थात् सगी बहन है, उसे यशोदा माँ ने पैदा किया है। इसका मतलब यह हुआ कि यशोदा मैया ने एक पुत्र भी पैदा किया और एक कन्या को भी जन्म दिया। इसीलिए व्यासजी कहते हैं कि योगमाया रूपी कृष्ण की बहन अपने भतीजों अर्थात् भगवान् के भक्तों, साधु-संतों को बहुत धन देती है; उनको बहुत प्यार करती है। एक और बहुत अच्छी बात आचार्यों ने लिखी है कि वास्तव में जो पुत्र हुआ, वह यशोदाजी के हुआ। आचार्य लोग लिखते हैं – **'भावं विना पुत्रत्वं न'** जब तक वात्सल्य-रस नहीं होगा, तब तक पुत्र कैसा ? जैसे भागवत में वर्णन आता है कि 'वराह भगवान्' ब्रह्माजी की नाक से उत्पन्न हुए तो क्या वे ब्रह्माजी के पुत्र कहलाये ? जब हिरण्याक्ष ने पृथ्वी को समुद्र में डाल दिया था और ब्रह्माजी सोच रहे थे कि पृथ्वी को बाहर कैसे निकाला जाये, उसी समय उनकी नाक से एक शूकर निकला और बाहर आकर वह बहुत बड़ा हो गया; क्या वह शूकर ब्रह्माजी का पुत्र बोला गया, उत्तर है – 'नहीं बोला गया'। जबकि है बेटा ही क्योंकि वराहजी की स्तुति में उनके लिए 'घ्राणज' शब्द का प्रयोग किया गया है। अतः ब्रह्माजी के अंग से उत्पन्न होने पर भी 'वराह भगवान्' को ब्रह्माजी का पुत्र नहीं कहा गया क्योंकि ब्रह्माजी का उनके प्रति वात्सल्य-भाव नहीं था। दूसरी बात, बालक परीक्षित की अश्वत्थामा के ब्रह्मास्त्र से रक्षा करने के लिए 'भगवान्' उत्तरा के गर्भ में भी गये, फिर उन्हें उत्तरा का पुत्र क्यों नहीं कहा गया ? इसलिए बिना वात्सल्य के कोई बेटा कैसे हो सकता है ?

"वाचयित्वा स्वस्त्ययनं जातकर्मात्मजस्य वै"

(श्रीभागवतजी १०/५/२)

नन्दबाबा ने वेदज्ञ ब्राह्मणों को बुलवाकर स्वस्तिवाचन और अपने पुत्र का जातकर्म-संस्कार करवाया। जातकर्म क्या है ? जब बच्चा पैदा होता है, तब नालछेदन किया जाता है। नालछेदन के बाद सूतक लगता है। नालछेदन के पहले बहुत दान किया जाता है और वह अक्षय माना जाता है। पुत्र का जन्म होने पर नन्दबाबा ने जातकर्म करवाया अर्थात् नालछेदन के पहले दान किया। नालछेदन के पहले ही जातकर्म किया जाता है। नाल 'आप्यायनी' नाड़ी होती है, माता के गर्भ में बालक को उसके द्वारा ही भोजन का रस मिलता है, जीवन मिलता है। अब यहाँ यह ध्यान देने योग्य बात है कि यदि यशोदा के पुत्र न उत्पन्न होता तो जातकर्म कैसे किया जाता क्योंकि जातकर्म के बाद ही नाल-छेदन किया जाता है और भागवत के इस श्लोक में स्पष्ट कहा गया है कि नन्दबाबा ने जातकर्म करवाया। इसका मतलब है कि यशोदा के पुत्र उत्पन्न हुआ क्योंकि जातकर्म के बाद ही तो नाल-छेदन होता है। जब तक 'श्रीकृष्ण' यशोदा के गर्भ से नहीं पैदा होते तब तक नाल-छेदन कैसे किया जा सकता था, इसलिए भी स्पष्ट है कि यशोदा के गर्भ से ही नन्दनन्दन का प्राकट्य हुआ, उसके बाद ही नाल-छेदन किया गया। ब्रज के संत कवियों ने भी नन्दलाला की

जन्मलीला का वर्णन किया है, उनका अनुभव भी सत्य है, उन्होंने लीला मन से सोचकर नहीं लिखी, इन्होंने कन्हैया की जन्मलीला को देखा है और देखने के बाद अपने पदों में उसका वर्णन किया है। इन महापुरुषों ने लिखा है कि यशोदाजी से साक्षात् लाला का जन्म हुआ। भागवत में कर्दमजी ने कहा है –

तान्येव तेऽभिरूपाणि रूपाणि भगवंस्तव।
यानि यानि च रोचन्ते स्वजनानामरूपिणः॥

(श्रीभागवतजी ३/२४/३१)

हे प्रभो! आपके भक्तों को आपका जो रूप अच्छा लगता है, वही रूप उपासना के योग्य है।

इस श्लोक में निर्णय कर दिया गया है। सूरदासजी आदि से बड़ा भक्त और कौन होगा? उनको नन्दनन्दन रूप अच्छा लगा तो वह रूप उपास्य है, वह लीला हुई है और उसे अक्षरशः सत्य मानना चाहिए। यह भागवत का प्रमाण है। सूरदासजी ने एक पद लिखा है; नन्दगाँव और बरसाने के समाज में इसे 'दाई के पद' के नाम से गाया जाता है – **"पौढ़ी भवन नन्द घरनी, जगत जस करनी, कृष्ण उर धरनी।"** नन्दरानी यशोदाजी अपने भवन में कृष्ण को गर्भ में धारण करके लेटी हुई हैं अर्थात् 'कृष्ण' यशोदाजी के गर्भ में हैं, वसुदेवजी के द्वारा मथुरा से नहीं लाये गये हैं।

"भाग्य बड़ बरनी अहो सुपने अचरज देखि सखि जगाई।" यशोदारानी सपना देख रही हैं और अपनी सखी से कह रही हैं कि पुत्र के पैदा होने का समय आ गया है – **सुन री भटू हितकारी कहा द्यों कहा री।**
अहो या सुपनो सखि साँचो उठि आलस छाँड़ री।

यशोदाजी कहती हैं – सखी! यह सच्चा सपना है, तू आलस्य छोड़ दे, मेरे लाला उत्पन्न होने ही वाला है, अब देर नहीं है। कोलाहल होने लगा, बिजली चमक रही है, लोग कह रहे हैं कि दाई को बुलाओ।

जगे नर नारी रैन अँधियारी दामिनी कौंधे न्यारी।
अहो ऊँचे चढ़ि टेरैं दाई बुलाओ री।
दाई मन्दिर आई सुकूँख सिरानी।

नन्दभवन में दाई आई और उसने यशोदाजी की कूँख मलना शुरू किया। **"भई मन भाई भवन छबि छाई अहो मिलि दस पाँच गहे री मंगल गाइयो।"** मन भाई बात होने लगी, सब समझ गये कि बालक का जन्म होने ही वाला है। बात बिलकुल सच है, यशोदाजी का सपना झूठा नहीं है। सबने सोहर (मंगलगीत) गाना शुरू कर दिया। दाई ने कहा कि बात बिल्कुल सही है, अब बालक का जन्म होने ही वाला है। दाई को पता पड़ जाता है कि बालक कब होने वाला है? जब बालक का जन्म हुआ तो यशोदाजी को दर्शन बाद में हुआ, पहले दाई को कृष्ण का दर्शन हुआ। **बोलो कन्हैया लाल की जय...**

यह महापुरुषों का अनुभव है, इसको कोई असत्य नहीं कह सकता, जो इसे असत्य कहता है, वह भक्त नहीं है। जो भक्तों-महापुरुषों की वाणी को असत्य बताता है, वह भक्त नहीं है, वह तो श्रद्धाहीन और नास्तिक है।

अस्तु, दाई ने कन्हैया का पहले दर्शन किया।

"तेई छिन ऊग्यो है चन्दा अरु प्रगटे नंदनन्दा"

उसी समय चन्द्रमा निकला और नन्द के लाला प्रकट हो गये। **बोलो नन्द के लाला की जय...**

नन्द के आनन्द भये, जय कन्हैया लाल की।
हाथी दीने घोड़ा दीने, और दीनी पालकी।
ज्वानन को हाथी घोड़ा, बूढ़न को पालकी।
शाल दिए दुशाला दिए, ये भी सवा लाख की।
ये भी सवा लाख की, और वो भी सवा लाख की।
"प्रगटे नन्दनन्दा, सकल सुख कन्दा,
तिमिर भयो मन्दा।"

सबको सुख देने वाले 'नन्दनन्दन' प्रकट हो गये।

सोवत नन्द जगाये, पुत्र ढिंग आये, लाल अन्हवाये।

नन्दबाबा को पुत्र होने का समाचार मिला तो वे दौड़कर आये – **"परम सचु पाए रतननि खपरा भरायो।"**

नन्दबाबा ने दाई का खपरा रत्नों से भर दिया। सूरदासजी ने यशोदाजी के नाल-छेदन के बारे में बहुत सुन्दर लीला लिखी है; 'यशोदाजी' दाई से कहतीं हैं कि नाल-छेदन कर, तो दाई कहती है –

"यशोदा नाल न छेदन दइहौं।"

यशोदा ! मैं नाल छेदने नहीं दूँगी। (अब दाई के नेग लेने का समय आ गया है।)

"मणिमय जटित हार ग्रीवा को, वहै आज हौं लइहौं।"

दाई कहती है – 'यशोदा ! आज तो मैं तुम्हारा नौलखा हार लेने के बाद ही नाल-छेदन करूँगी।'

बहुत दिनन की आशा लागी झगरन झगरो कीन्हो।
मन में बिहँसि तबै नन्दरानी हार हिये को दीन्हो॥

यशोदाजी ने कहा – 'तू नाल-छेदन कर। ले, तू हार ही तो लेगी और क्या करेगी ? बड़ी मुश्किल से तो मेरे लाला हुआ है।' कन्हैयाजी पालने में पड़े हैं और इधर दाई झगड़ा कर रही है कि पहले मैं हार लूँगी, तब नाल-छेदन करूँगी। सूरदासजी कहते हैं –

जाकी नाल आदि ब्रह्मादिक सकल विश्व आधार।

जिस भगवान् की नाभि से कमल पैदा होता है और जिससे सारे विश्व की सृष्टि होती है। सारा संसार जिस भगवान् की नाभि के नाल से प्रकट होता है –

सूरदास प्रभु गोकुल प्रगटे, मेटन को भुवि भार।

आज वही भगवान् यशोदाजी की नाल में बँधे हुए पड़े हैं, दाई कहती है कि मैं नाल नहीं छेदूँगी, पहले मुझे हार दो। यह महापुरुषों का अनुभव है कि वास्तव में यशोदाजी के गर्भ से लाला का जन्म हुआ। यदि यशोदा के द्वारा पुत्र न उत्पन्न होता तो महापुरुष इस लीला को कैसे गाते ? इस प्रकार पुराणों के आधार पर, श्रीमद्भागवत के आचार्यों की टीका के द्वारा तथा रसिक महापुरुषों की वाणी के द्वारा इस बात को प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया कि वास्तव में यशोदाजी के गर्भ से पुत्र का जन्म हुआ था। इन सब प्रमाणों को कोई गलत नहीं बता सकता। इन सब प्रमाणों से यही सिद्ध होता है कि सच में यशोदाजी से पुत्र का जन्म हुआ और उस नन्दनन्दन में वसुदेवनन्दन आकर लीन हो गये। यहाँ तो बहुत संक्षेप में वर्णन किया गया, नहीं तो प्रमाण तो बहुत से हैं।

नन्दस्त्वात्मज उत्पन्ने जाताह्लादो महामनाः।
आहूय विप्रान् वेदज्ञान् स्नातः शुचिरलङ्कृतः॥

(श्रीभागवतजी १०/५/१)

इस प्रकार नन्दजी के वास्तव में आत्मज (पुत्र) का जन्म हुआ। नन्दजी को बहुत आनन्द हुआ, वे बड़े ही उदार थे, उन्होंने स्नान किया और सुन्दर-सुन्दर वस्त्राभूषण धारण किये, इसके बाद नन्दबाबा ने ब्राह्मणों को बुलवाया –

वाचयित्वा स्वस्त्ययनं जातकर्मात्मजस्य वै।
कारयामास विधिवत् पितृदेवार्चनं तथा॥

(श्रीभागवतजी १०/५/२)

नन्दबाबा ने ब्राह्मणों से कहा कि आप लोग मन्त्रों का उच्चारण करिये। ब्राह्मण लोग नन्द के लाला को आशीर्वाद देने लगे, स्वस्तिवाचन करने लग गये।

भगवान् श्यामसुन्दर के अनेक रूप हैं। गर्गाचार्यजी ने भी कहा कि यह केवल वसुदेव का ही पुत्र नहीं है।

बहूनि सन्ति नामानि रूपाणि च सुतस्य ते।

(श्रीभागवतजी १०/८/१५)

नन्दबाबाजी ! तुम्हारे पुत्र के अनेक नाम और अनेक रूप हैं; इसलिए इन सब बातों से सिद्ध होता है कि यशोदाजी के पुत्र का जन्म हुआ था।

'नन्दस्त्वात्मज' (नन्दस्तु आत्मज) - आचार्यों ने बताया है कि यदि यहाँ 'तु' न लगाते तब भी श्लोक की पादपूर्ति हो जाती परन्तु बिना 'तु' के श्लोक की पादपूर्ति होने पर भी 'तु' लगाया गया तो इससे पता पड़ता है कि वसुदेवनन्दन के होते हुए भी 'नन्दनन्दन' उत्पन्न हुए, यह 'तु' शब्द का अर्थ है। इसके अतिरिक्त इस श्लोक में प्रयुक्त शब्द 'जाताह्लादो' का अर्थ आचार्यों ने किया है कि नन्दजी के केवल पुत्र ही पैदा नहीं हुआ बल्कि आह्लाद (आनन्द) भी पैदा हुआ अर्थात् यहाँ वात्सल्यरस से युक्त भगवान् पैदा हुए। नन्दबाबा ने ब्राह्मणों के द्वारा अपने पुत्र का विधिवत् जातकर्म-संस्कार करवाया। पितरों के लिए श्राद्ध किया गया, देवताओं की भी पूजा करवाई। नान्दीश्राद्ध भी किया। लाला को घी मिश्रित मधु चटाया गया। नन्दबाबा ने ब्राह्मणों को दो लाख गायें दान कीं, रत्नों से मिले हुए तथा सोने के वस्त्रों से ढके हुए तिल के सात पहाड़ दान किये। तिल के सात पहाड़ क्यों बनाये जाते हैं ? ऐसा करने से सुमेरु-पर्वत के दान के समान फल मिलता है, सुमेरु आदि पर्वतों के भाव से यह दान किया जाता है।

श्रीकृष्णजन्म से हुआ सर्वसमृद्धिमय ब्रज

बाबाश्री द्वारा निःसृत श्रीभागवतसप्ताह कथा (२२/२/१९८५) से संकलित

कन्हैया के जन्म की प्रसन्नता में नन्दबाबा ने ब्राह्मणों को अनेक प्रकार के दान दिए क्योंकि द्रव्य की शुद्धि 'दान' से होती है। यहाँ शुद्धि के बहुत से उपाय बताये गये हैं, जैसे - समय से भूमि, स्नान से शरीर, संस्कारों से गर्भादि, संतोष से मन की शुद्धि होती है; इस तरह अनेक तरह की शुद्धि यहाँ बताई गई है। ब्राह्मण लोग मंगलमय वाणी बोलने लगे। सूत, मागध और वन्दीजन आये; 'सूत' पुराणों का गायन करते हैं, 'मागध' वंशावली गाते हैं, 'वन्दी' वे होते हैं जो समय के अनुसार स्तुति करते हैं। गायक लोग गाने लगे। भेरी और दुन्दुभियाँ बिना बजाये अपने आप बजने लगीं। भेरी तो उत्सवों पर बजती है तथा दुन्दुभियाँ मंगलमय अवसर पर बजती हैं। सारे ब्रजमण्डल को अच्छी तरह झाड़ा-बुहारा गया, इत्र से सींचा गया। सभी घरों के द्वार, आँगन और घर के कोने-कोने अच्छी तरह पिचकारियों द्वारा सींचे गये। अनेकों प्रकार की ध्वजा-पताका, पुष्पों की माला, तोरनवार, आम के पल्लव आदि बाँधे गए। गाय, बैल और बछड़ों के अंगों में हल्दी-तेल का लेप किया गया, उन्हें अनेक प्रकार की सोने की मालायें पहनायीं गयीं। इतना सोना ब्रज में कहाँ से आ गया ? 'भगवान्' जब से ब्रज में आये, तभी से समस्त ऋद्धि-सिद्धि और सम्पत्तियाँ ब्रज में विचरण करने लगीं। सभी गोप सुन्दर-सुन्दर कंचुक, पाग, आभूषण आदि से सजकर तथा लाला के लिए भेंट लेकर नन्दबाबा के घर आये। गोपियाँ भी सुन्दर साड़ी और आभूषणों को पहनकर आयीं। ब्रजदेवियों ने अपने मुख पर कुंकुम का लेप किया और भेंट की सामग्री लेकर जल्दी-जल्दी नन्दभवन की ओर चलीं।

नवकुङ्कुमकिञ्जल्कमुखपङ्कजभूतयः।
बलिभिस्त्वरितं जग्मुः पृथुश्रोण्यश्चलत्कुचाः॥

(श्रीभागवतजी १०/५/१०)

उनके नितम्ब स्थूल थे और स्तन हिल रहे थे, इसका भाव यह है कि स्थूल नितम्ब और स्तनों के कारण जल्दी चलने में कष्ट होता है परन्तु आनन्द के कारण सभी ब्रजदेवियाँ जल्दी-जल्दी नन्दलाला के दर्शन के लिए चली जा रहीं थीं।

गोप्यः सुमृष्टमणिकुण्डलनिष्ककण्ठय-
श्चित्राम्बराः पथि शिखाच्युतमाल्यवर्षाः।

(श्रीभागवतजी १०/५/११)

गोपियों के कानों में मणियों के कुंडल एवं गले में सोने के हार हैं, वे अनेक प्रकार की रंग-बिरंगी साड़ियाँ पहने हैं। चलते समय उनकी चोटियों में गुँथे हुए फूल रास्ते में गिरते जा रहे थे। ब्रजगोपियों की चोटियों से फूल क्यों गिर रहे हैं, इस छटा का बहुत सुन्दर वर्णन नन्ददासजी ने किया है, यह पद नन्दगाँव में गाया जाता है –

ए हो थकि थकि परत कुसुम सीतन पे,
उपमा कौन बखानो।

गोपियाँ 'नन्दभवन' को जा रहीं हैं, उनकी चोटियों से फूल गिर रहे हैं, उसकी क्या उपमा दें, मानो जो चरण नन्दभवन में जा रहे हैं, उन पर रीझकर केशपाश फूल बरसा रहे हैं कि धन्य हैं ये चरण, जो आज नन्दभवन में लाला की बधाई देने जा रहे हैं।

इस प्रकार गोपिकाएँ नन्दभवन में जा रहीं हैं, हाथों में खनखनाते हुए कंकण हैं, कानों के कुण्डल हिल रहे हैं, कुंकुम लगे हुए पयोधर हिल रहे हैं। ये केवल चलने के कारण नहीं हिल रहे हैं, यह हृदय में आनन्द और प्रेम की हिलोर है कि अनादिकाल से हम लोग 'नन्दनन्दन' के लिए प्यासे थे, आज वे प्रकट हो गये। (इसलिए हिलकर अपनी प्रसन्नता को प्रकट कर रहे हैं) इस प्रकार नन्दभवन को जाती हुईं ब्रजगोपियों की अलौकिक शोभा थी। यशोदाजी के पास जाकर वे नन्दलाला को आशीर्वाद देती थीं – 'यशोदा का लाल चिरजीवी हो।'

ब्रज में लाड़ली-लाल को आशीर्वाद देने की यह सुन्दर प्रथा है। ब्रजवासी होली खेलते हैं तो लाली-लाला को आशीर्वाद देंगे – 'चिर जियो होली के रसिया।' कोई

भी उत्सव हो तो ब्रज में श्यामसुंदर और श्रीजी को आशीर्वाद दिया जाता है । इसीलिए ब्रजगोपिकाएँ 'नन्दलाला' को आशीर्वाद दे रहीं थीं। वात्सल्यरस में तो आशीर्वाद दिया ही जाता है । श्रृंगार-रस में भी सखी-सहचरियाँ श्रीजी-श्यामसुंदर को आशीर्वाद देतीं हैं, सख्यरस में सखा भी कन्हैया को आशीर्वाद देते हैं। ब्रज में सब कन्हैया को आशीर्वाद देते हैं।

ता आशिषः प्रयुञ्जानाश्चिरं पाहीति बालके ।
हरिद्राचूर्णतैलाद्भिः सिञ्चन्त्यो जनमुज्जगुः ॥

(श्रीभागवतजी १०/५/१२)

ब्रजगोपियाँ नन्दभवन में आये लोगों पर हल्दी का चूर्ण, तेल और जल मिलाकर छिड़क देती थीं। ऐसा क्यों ? इसका भाव वल्लभाचार्यजी ने अपनी टीका में लिखा है कि नन्दभवन में सम्बद्ध, असम्बद्ध, उभयविध और अन्य – चार प्रकार की गोपियाँ गयीं हैं। वल्लभाचार्यजी लिखते हैं – **"हरिद्राचूर्णयोर्मेलने आरक्तो भवति तैलेन च संपृक्तं न कदापि त्यजति ।"** हल्दी और चूना मिलाने से लाल रंग हो जाता है और तेल मिलाने से वह छूटता नहीं है। इसमें जल मिलाकर कितना भी फेंको, घटता नहीं है। गोपियाँ बड़ी चतुर हैं, इसीलिए हल्दी, तेल और चूना के साथ जल मिलाकर सभी पर छिड़क रहीं हैं। नन्दभवन जाती हुई ब्रजगोपिकाओं के बारे में वल्लभाचार्यजी ने अपनी श्रीमद्भागवत की टीका में बड़े सुन्दर भाव लिखे हैं।

जाते समय उनके स्थूल नितम्ब और स्तन हिल रहे हैं तो इसका भाव वे लिखते हैं –

"त्वरागमनन्तासामत्यशक्यम्"

जिनके स्थूल नितम्ब और स्थूल स्तन होते हैं, वे जल्दी नहीं दौड़ सकती हैं । **पृथुश्रोण्यश्चलत्कुचाः** – (श्रीभागवतजी १०/५/१०) इसकी टीका में वल्लभाचार्यजी लिखते हैं – **पृथुश्रोण्यः चलत् कुचाः अत्युच्चतया कुचयोः चलनं गमनप्रतिबन्धकं भवति –** ब्रजाङ्गनाओं के बहुत ऊँचे स्तन हैं, वे चलने में बाधा उत्पन्न कर रहे हैं तो वल्लभाचार्यजी आगे लिखते हैं –

"यत्राशक्यं ताः सम्पादयन्ति तत्र शक्ये कः सन्देह"

जब कठिन काम भी सरल हो गया है, स्थूल स्तन वाली गोपियाँ भी बड़े तीव्र वेग से नन्दभवन पहुँच गयीं हैं तो जो छरहरी गोपियाँ हैं, उनका क्या कहना । ऐसा अद्भुत नन्दोत्सव हुआ कि गोपियाँ कृष्ण के लिए मंगल गीत गा-गाकर सबके ऊपर हल्दी-तेल मिश्रित जल छिड़क रहीं थीं। बड़े-बड़े मंगलमय और विचित्र बाजे बजाये जाने लगे। चार प्रकार के वाद्य होते हैं – तन्तु, सुषिर, अवनद्ध और घन। जीव गोस्वामी जी लिखते हैं कि नन्दोत्सव में चारों प्रकार के वाद्य बज रहे हैं, क्यों ? क्योंकि अनन्त जो भगवान् हैं, वे नन्द के ब्रज में आये हैं।

गोपाः परस्परं हृष्टा दधिक्षीरघृताम्बुभिः ।
आसिञ्चन्तो विलिम्पन्तो नवनीतैश्च चिक्षिपुः ॥

(श्रीभागवतजी १०/५/१४)

गोपगण बड़े प्रसन्न हो रहे हैं। नन्दभवन में बहुत से सिद्ध गोप आये हैं, जो आयु में बहुत बड़े हैं। मधुमंगल आदि ग्वाल तो आयु में बलराम जी से भी बड़े हैं और श्रीकृष्ण के नित्य सखा हैं। ये समझ गये कि हमारा सखा आ गया है। अतः ये दही, दूध और घी के माट भरकर लाये, कोई-कोई ग्वाल जल के माट लाये क्योंकि ये अलग प्रकार का खेल रचाएंगे। इन ग्वालबालों ने पहले तो दूध, दही और घी के सैकड़ों माटों को एक दूसरे पर उड़ेलकर दूध-दही की होली खेली। इसके बाद **नवनीतैश्च चिक्षिपुः** माखन की लौनी एक दूसरे के ऊपर गेंद की तरह फेंकने लगे। उन्होंने कहा कि आज नन्द के लाला का जन्म हुआ है तो खूब खेल खेलो, चाहे नन्द बाबा हों चाहे कोई बड़ा-बूढ़ा हो, सबके ऊपर माखन की लौनी फेंको। भीड़-भाड़ में बड़े-बूढ़े दूर खड़े थे क्योंकि बच्चों के बीच में कौन घुसेगा ? एक बुढ़िया दूर खड़ी होकर देख रही थी, उससे एक गोप ने कहा – 'अरी दादी ! आगे चलकर देख, वहाँ बड़ा आनन्द हो रहा है। वहाँ सभी लोग नाच-गा रहे हैं।' बुढ़िया बोली – 'अच्छा भैया।' ऐसा कहने पर उसका मुख खुला तब तक किसी ग्वालबाल ने माखन का लौना फेंका तो वह बुढ़िया के मुख में घुस गया और वह अपना मुँह चलाकर माखन का स्वाद लेने लगी और कहने लगी – 'बड़ा आनन्द है।' नन्द के आनन्द भयो कहने लगी । इस

प्रकार ग्वाल बाल एक दूसरे के मुख पर माखन के लौंदे फेंकने लगे। इसके बाद ग्वारिया बोले कि आज कुछ नया कौतुक रचो। नन्द बाबा पाँच सगे भाई थे। दूसरे चार भाई सौतेली माता से थे। इस प्रकार ये नौ नन्द थे। इनमें उपनन्द जी सबसे बड़े थे। उनकी पत्नी बड़ी मोटी थीं, स्त्रियों में सबसे अधिक मोटी वे ही थीं और पुरुषों में नन्द जी के छोटे भाई सुनन्द जी सबसे अधिक मोटे थे। सभी ग्वारिया सुनन्द जी से बोले कि बाबा ! आज तो तुम्हें नाचना पड़ेगा। वे बड़े प्रसन्न थे इसलिए बोले – 'अच्छा भैया ! अवश्य नाचूँगा।' दूसरी ओर से ग्वारिया उपनन्द जी की पत्नी को ले आये जो सबसे अधिक मोटी थीं। उनसे ग्वारिया बोले – 'दादी ! आज तुझे भी नाचना पड़ेगा।' वे बोलीं – 'ठीक है, आज मैं भी नाचूँगी।' अब नन्द बाबा के आँगन में यह तमाशा होने लगा कि ऐसे मोटे स्त्री-पुरुष, जिनको चलना भी मुश्किल, उन्हें नचाने के लिए लाया गया। अब सुनन्दजी और उपनन्दजी की पत्नी का नृत्य शुरू हुआ। सुनन्दजी सबसे मोटे थे, जब उन्होंने ठुमका लगाया तो एक ग्वारिया ने उनके पाँव के नीचे पिघले माखन का चिकना गोला रख दिया। ग्वाल बाल बोले – 'अरे बाबा ! जोर से नाचो।' सुनन्दजी बोले – 'हाँ, जोर से ठुमका मारूँगा।' जब उन्होंने जोर से ठुमका मारा, तुरन्त ही ग्वारिया ने उनके पाँव के नीचे माखन का गोला रख दिया। जब उनका पाँव उस गोले पर पड़ा तो सुनन्द जी धड़ाम से नीचे गिर पड़े और उनके ऊपर उनके साथ ही नाचती हुई उपनन्दजी की पत्नी भी गिर पड़ीं क्योंकि किसी ग्वारिया ने उनके नितम्ब पर धक्का मार दिया था। अब नीचे तो सुनन्द बाबा और उनके ऊपर उपनन्द जी की पत्नी तथा सब ग्वारिया उनके ऊपर दही और पानी के मटके उड़ेलने लगे और जोर-जोर से कहने लगे – 'नन्द के आनन्द भयो जय कन्हैया लाल की।' इस प्रकार से ब्रजवासियों ने बड़ी धूमधाम से नन्दोत्सव मनाया।

नन्दो महामनास्तेभ्यो वासोऽलंकारगोधनम्।
सूतमागधवन्दिभ्यो येऽन्ये विद्योपजीविनः॥

(श्रीभागवतजी १०/५/१५)

नन्दबाबा दूर से यह उत्सव देख रहे थे, वे बड़े उदार थे। उन्होंने सबको भेंट दी। सूत-मागध और वन्दी जनों को भी भेंट की वस्तुएं दीं। **येऽन्ये विद्योपजीविनः** – अन्य विद्योपजीवियों को भी भेंट दी। आचार्य लोग विद्योपजीवी का अर्थ करते हैं – **भरतशास्त्रादिविद्ययोपजीवी।** विद्योपजीवी का अर्थ है कि नन्दभवन में बहुत से नाटकों का आयोजन किया गया। इन नाटक आदि विद्याओं से जीवन निर्वाह करने वाले विद्योपजीवियों को भी नन्द बाबा ने उनकी मुँहमाँगी वस्तुएँ दीं।

बाजे बाजे री बधाई मैया तेरे अँगना।
मात जसोदा लाला जायो सुनि-सुनि लोग भये मँगना॥
उमगि-उमगि नन्ददान देत हैं बाँह भरा बाजूबंद कँगना।

नन्द बाबा आभूषण लुटा रहे हैं।

सूरदास आसीष देत हैं चिरजीवो छगना मगना॥

सभी लोग आशीर्वाद दे रहे हैं कि नन्द-यशोदा का यह छगन-मगन चिरजीवी हो। नन्दबाबा ने भगवान् विष्णु की आराधना के लिए और अपने पुत्र के अभ्युदय के लिए बहुत सा दान दिया। परन्तु नन्द बाबा ने देखा कि रोहिणी जी इस उत्सव में नहीं आयीं हैं। उनके बारे में शुकदेवजी ने कहा – **रोहिणी च महाभागा** – (१०/५/१७) रोहिणीजी महाभाग्यशालिनी थीं क्योंकि वसुदेवजी की जितनी भी पत्नियाँ थीं, उनमें केवल रोहिणीजी को ही ब्रज लीला देखने का अवसर मिला था इसलिए वे वसुदेवजी की समस्त पत्नियों में सबसे अधिक सौभाग्यशालिनी थीं।

हम मनुष्य बनकर भी 'जिन तन दियो, ताहि बिसरायौ, ऐसौ नमक-हरामी।' नमक हराम प्राणी हैं क्योंकि हम शरीर को बनाने वाले (भगवान्) को ही भूल जाते हैं, यह सबसे बड़ा पाप (गुनाह) है। हमको नित्य उनकी ओर चलना है, उनको रिझाना है, उनको प्रेम करना है।

मंगलनिधि 'नन्दोत्सव'

बाबाश्री द्वारा निःसृत श्रीभागवतसप्ताह कथा (२२/२/१९८५) से संकलित

जीव गोस्वामीजी अपनी टीका में लिखते हैं कि वसुदेवजी की पत्नी का नाम 'रोहिणी' क्यों पड़ा ?

"रोहयति जनयति व्रजसुखं तत्छीलेति"

जो ब्रजसुख की उत्पत्ति कराती हैं, वे रोहिणी हैं इसलिए १०/५/१७ में उन्हें महाभागा कहा गया है । जीव गोस्वामीजी लिखते हैं –

"श्रीवसुदेवपत्नीभ्यः श्रीदेवकीतश्च भाग्यविशेषवती"

रोहिणीजी देवकीजी से भी अधिक भाग्यशालिनी हैं क्योंकि जनयति ब्रजसुखं । **रोहयति** का अर्थ है **जनयति** अर्थात् जो ब्रजसुख को पैदा करतीं हैं, **तत्छीलं यस्याः –** ऐसा शील है जिनका । इसी श्लोक(१०/५/१७) में **'व्यचरद्'** क्यों लिखा है – **"व्यचरद् दिव्यवासः स्रक्कण्ठाभरणभूषिता"**

जीव गोस्वामीजी जी लिखते हैं – "**स्वगृहान्तःशायितस्य तदीयाभिनवबालकस्यात्रानुक्ति**"

वे अपने पुत्र बलरामजी को भीतर सुला आयीं थीं क्योंकि नन्दभवन में बहुत भीड़ थी । व्यचरद् का अर्थ है कि वे विशेष रूप से नन्दोत्सव में आकर नाचीं और गीत गाये ।

महापुरुष लोग बताते हैं कि परजन्यजी की पुत्रियाँ अर्थात् नन्द बाबा की बहनें नन्दा और सुनन्दा आयीं और यशोदाजी कहने लगीं –

विपुल बधावो वीर घर,
वीर तुम्हारो देस बेटी ।

हे वीर ! यहाँ किसी वस्तु की कमी नहीं है, कोई वस्तु दुर्लभ नहीं है । तुम अपने सब नेग करो । तब नन्दाजी यशोदाजी से कहतीं हैं –

धनि तेरी पटुला माँय ।

भाभी ! तुम्हारी माँ पटुला धन्य है जो उसने तुम्हारे जैसी पुत्री को उत्पन्न किया और जब हमारे पिता परजन्य बाबा से नन्दजी उत्पन्न हुए तो देवमीढ राजा की पुत्री अर्थात् परजन्य की बहिन यानी नन्द बाबा की बुआ को सौ छकड़े साड़ियाँ मिलीं थीं ।

देवमीढ नृप की सुता, लिए हैं सकट सत चीर ।

किन्तु मैं तो उनसे चौगुना लूँगी तब मेरा नेग पूरा होगा इसलिए सोच लो । यशोदाजी कहतीं हैं – 'अरे, ये तुमने क्या माँगा ?' **अहो बेटी इतने को कहा माँगनो**
ब्रजपति प्रबल प्रकाश ।

तुमने तो बहुत थोड़ा ही माँगा ।

अहो बेटी खोल बड़े नग कोश ।

यशोदा जी ने रत्नों के खजाने खोल दिए कि जितने चाहो उतने रत्न ले लो ।

तत आरभ्य नंदस्य व्रजः सर्वसमृद्धिमान् ।
हरेर्निवासात्मगुणै रमाक्रीडमभून् नृप ॥

(श्रीभागवतजी १०/५/१८)

अब कोई सोचे कि ब्रज में इतना अधिक धन कहाँ से आ गया तो उसके उत्तर में इस श्लोक में शुकदेवजी कह रहे हैं – **"नन्दस्य व्रजः सर्वसमृद्धिवान"**

ब्रज में समस्त ऋद्धियाँ-सिद्धियाँ गली-गली डोलने लगीं । रत्न पड़े रहते थे और कोई ब्रजवासी उन्हें उठाता नहीं था । ऐसा क्यों ?

हरेर्निवासात्मगुणै रमा क्रीडमभून्नृप –

(श्रीभागवतजी १०/५/१८)

सर्वप्रियता आदि गुणों के कारण भगवान् का निवास स्थान ब्रज लक्ष्मी के खेलने का स्थान बन गया था । यहाँ पर कुछ आचार्य अपनी टीका में लिखते हैं कि रमाक्रीडम् का मतलब है कि ब्रज श्रीजी(राधारानी) के खेलने का स्थान बन गया क्योंकि भागवत में आगे के प्रसंग में बताया गया है कि यह तो लक्ष्मी जी के लिए अत्यंत दुर्लभ वस्तु है । **"नायं श्रियोऽङ्ग उ नितान्तरतेः प्रसादः" –**

(श्रीभागवतजी १०/४७/६०)

इसीलिए यह कहने का अभिप्राय यह है कि जब से श्यामसुंदर ब्रज में आये, किशोरीजी भी यहाँ खेलने लगीं । 'रमाक्रीडम' का ही विस्तार महापुरुषों ने किया है कि श्रीकृष्ण के जन्मोत्सव पर समस्त रावल अथवा बरसानावासी उमंग के साथ गोकुल गये । वृषभानु बाबा

और कीर्ति मैया भी गये तथा नन्द बाबा व यशोदा मैया को कान्हा के जन्म की बधाई दी।

सब सुख छाये परम धाम।

सुख धाम श्याम अभिराम जू गोकुल आए,

मिट गये द्वंद्व नन्द दातन के भये सब मंगल काम ।।

भगवान् के आने से अनन्त सुख समृद्धि ब्रज के घर-घर में बिखरी पड़ रही है।

कुछ दिनों के बाद नन्द बाबा गोकुल की रक्षा में गोपों को नियुक्त करके कंस को कर देने के लिए मथुरा गये। वहाँ जाकर वे वसुदेवजी से मिले। उन्होंने वसुदेवजी का आलिंगन किया, नमस्कार नहीं किया। आचार्य लोग लिखते हैं कि वसुदेवजी आयु में नन्दबाबा से छोटे थे यद्यपि वर्ण में वसुदेवजी बड़े थे क्योंकि देवमीढ जी की क्षत्राणी पत्नी से वसुदेवजी का वंश अलग हुआ और देवमीढ जी की वैश्य स्त्री से नन्द बाबा का वंश अलग हुआ। देवमीढ जी से वंश अलग हुआ। उनकी क्षत्रिय पत्नी से शूरसेनजी पैदा हुए तथा वैश्य पत्नी से परजन्यजी हुए। फिर शूरसेन के वसुदेवजी तथा परजन्य के नन्द बाबा हुए। वसुदेवजी क्षत्रिय होने के कारण वैश्य नन्द बाबा से वर्ण में बड़े थे। नन्द बाबा ने अपने वैश्य वर्ण के अनुसार गोपालन किया। किन्तु फिर भी आयु में नन्द बाबा बड़े थे इसीलिए उन्होंने वसुदेवजी का आलिंगन किया। वसुदेवजी नन्द बाबा से बोले – 'अरे नन्दजी ! आपको बड़ी अवस्था में पुत्र पैदा हुआ।'

दिष्ट्या भ्रातः प्रवयस इदानीमप्रजस्य ते

– (श्री भागवत जी १०/५/२३)

ब्रजवासी कहते हैं कि नन्द बाबा पचासी वर्ष के हो चुके थे तब पुत्र का जन्म हुआ। यह झूठ नहीं है। 'प्रवयस' का अर्थ है कि नन्द बाबा की आयु बहुत अधिक हो गयी थी। उन्हें संतान होने की कोई सम्भावना नहीं थी। भगवत् आराधना और कृपा से उन्हें पुत्र प्राप्ति हुई। वसुदेवजी ने उनसे यहाँ तक कहा कि – **प्रजाशाया निवृत्तस्य -** आपको संतान की आशा हट गयी थी।

स्त्रियों को जब तक मासिक धर्म होता है तभी तक संतान की आशा रहती है। मासिक धर्म बंद होने के बाद सन्तान की आशा हट जाती है।

कुछ आचार्य लोग लिखते हैं कि बिलकुल अनहोनी बात हुई कि संतान की आशा भी हट गयी कि इतनी अधिक अवस्था में अब संतान नहीं होगी।

इसलिए ब्रजवासियों ने नन्द बाबा से कहा – 'बाबा ! तेरी पचासी वर्ष की आयु में बेटा हुआ।'

तो यह बात सही है।

इसके बाद वसुदेवजी ने कहा कि मेरा पुत्र बलराम आपको ही अपना पिता मानता होगा।

दाऊजी के जन्म के विषय में भी मतभेद है। कुछ आचार्य ऐसा मानते हैं कि दाऊजी का जन्म मार्गशीर्ष शुक्ल पंचमी को हुआ था। जीवगोस्वामीजी का मत है कि बलराम जी श्रीकृष्ण से आठ महीने बड़े थे। कुछ आचार्य ऐसा मानते हैं कि भाद्रपद शुक्ल पक्ष की षष्ठी तिथि में बुधवार को दोपहर में बलराम जी का जन्म हुआ। इस हिसाब से ये श्रीकृष्ण से साढ़े ग्यारह महीने बड़े हैं। एक मत से आठ महीने बड़े तथा दूसरे मत से साढ़े ग्यारह महीने बड़े हैं। कुछ आचार्य जैसे चाचा वृन्दावनदासजी के अनुसार श्रावण शुक्ल पंचमी (जिसे नाग पंचमी भी कहते हैं) को बलराम जी का जन्म हुआ था। इस तरह देखा जाये तो हर स्थिति में बलदाऊजी आयु में श्रीकृष्ण से बड़े हैं।

गौ-सेवकों की जिज्ञासा पर माताजी गौशाला का

Account number दिया जा रहा है –

SHRI MATAJI GAUSHALA, GAHVARVAN ,BARSANA, MATHURA

Bank – Axis Bank Ltd A/C – 915010000494364

IFSC – UTIB0001058

BRANCH – KOSI KALAN MOB. NO. - 9927916699

निष्कामता से अनन्य प्रेम

बाबाश्री के संध्याकालीन सत्संग से संकलित

'अनन्यता' माने ये नहीं होता है कि हम रामानन्दी हैं तो 'राम-राम' ही कहेंगे, कृष्ण नहीं कहेंगे और कृष्णानन्दी हैं तो 'कृष्ण-कृष्ण' ही कहेंगे, राम नहीं कहेंगे; नहीं । अनन्यता में सबसे पहली 'सावधानी व पहिचान' है – जब हम 'राम ही राम' कहेंगे, 'कृष्ण' नहीं कहेंगे और लड़ुआ के लिये छाती अड़ा रहे हैं तो अनन्य कहाँ हैं? लड़ुआफोर हैं। 'अनन्य' तो वह है जिसको यहाँ से ब्रह्मलोक तक की वस्तुओं की कभी इच्छा ही न हो; अभी तो हमारी कुत्तों जैसी स्थिति है – अच्छा शॉल देखा, दुशाला देखा, आसन देखा, घड़ी-घंटा देखा और तुरन्त 'वाह-वाह !!' करने लग जाते हैं तो 'अनन्य' कैसे हो सकते हैं ? अच्छा वस्त्र देखा तो प्रसन्न होकर कहते हैं कि बड़ा अच्छा शॉल है, दुशाला है, ये बड़ा अच्छा कम्बल है, ये बहुत बढ़िया घड़ी है, ये बहुत बढ़िया आसन है तो हम 'अनन्य' कहाँ हैं? (मायिक वस्तुओं में आसक्ति व भोगबुद्धि होने से जीव की अनन्यवृत्ति नष्ट हो जाती है।)

योषिद्धिरण्याभरणाम्बरादिद्रव्येषु मायारचितेषु मूढः ।
प्रलोभितात्मा ह्युपभोगबुद्धया पतङ्गवन्नश्यति नष्टदृष्टिः ॥ (श्रीभागवतजी ११/८/८)

मायारचित ये (स्त्री, स्वर्ण, आभूषण, कपड़ा आदि पदार्थ) सब वस्तुयें हैं, इसमें मनुष्य का लोभ हो जाता है उपभोगबुद्धि होने से; जैसे पतंगा जल जाता है, उसी तरह से हमलोग खिंचने (आकर्षण) मात्र से ही नष्ट हो जाते हैं; आकर्षित होने से ही वृत्ति नष्ट हो गई, उपासना नष्ट हो गई, भक्ति नष्ट हो गई; जिससे मनुष्य नष्ट हो गया; फिर 'अनन्य' कहाँ रहा ? अभी पाँच सौ रुपये का नोट दे दो हाथ में तो 'एक परा' खून बढ़ जाएगा, अनन्य हैं क्या ? 'द्रव्येषुमायारचितेषु' ये सब मायारचित द्रव्य हैं; अच्छा कपड़ा है, अच्छा भोजन है, ये अच्छी चीज है, इनमें मन घुस गया तो 'अनन्य' कैसे हैं, भगवान् के भक्त कहाँ रहे ? 'बड़ा सुन्दर उपदेश दिया है अर्जुन को, (ये प्रसंग जैमिनीअश्वमेध में आता है) हे अर्जुन ! तुमने कृष्ण को छोड़कर के यज्ञों की शरण लिया, तुम अनन्य कहाँ रहे ? साधन का भी अनन्य होना चाहिए; इसीलिये गोसाईंजी ने कहा – **'साधन सिद्ध राम पद नेहू'** भक्ति का साधन भी भक्ति है और चीजें नहीं हैं । भक्ति अनेक प्रकार की होती है, रूपगोस्वामीजी ने लिखा – अधिकतर लोग आरोपसिद्धा व सङ्गसिद्धा भक्ति करते हैं, बहुत-से लोग योगमिश्रा, ज्ञानमिश्रा भक्ति करते हैं। 'अनन्य भक्ति' तो कोई विरले ही करते हैं। आरोपसिद्धा क्या है? समस्त कर्म भगवान् को अर्पित करो, ये करो तो अब 'कर्म' भक्ति बन जायेंगे, कर्मों में भक्ति का आरोप किया गया । सङ्गसिद्धा क्या है ? 'ज्ञान-वैराग्य' भक्ति के साथ फल देते हैं, बिना भक्ति के ये फल नहीं देते हैं, इसलिये सङ्गसिद्धा भक्ति बोली गई है; इसी तरह योगमिश्रा, ज्ञानमिश्रा। विशुद्धाभक्ति तो कोई-कोई करता है जो अपने इष्ट का 'नाम-रूप-लीला-गुण' गाता है। इसलिए साधन का भी अनन्य होना चाहिए।

एषणायें पीछा नहीं छोडती हैं; 'एषणा' माने नाम हो जाए, धन मिल जाए, भोग मिल जाए; ये सब चीजें भक्ति में बहुत बड़ी हानिकारक हैं। वास्तविक बात यही है कि 'भगवद्रति' का हृदय में अंकुर तभी फूटता है –

छूटी त्रिबिधि ईषना गाढ़ी ।
एक लालसा उर अति बाढ़ी ॥
राम चरन बारिज जब देखौं ।
तब निज जन्म सफल करि लेखौं ॥

(श्रीरामचरितमानसजी, उत्तरकाण्ड -११०)

जो सच्चाई की बात है वह तो यही है कि जब एषणायें चली जाती हैं, तब जागता है आदमी यानि तभी 'प्रेम' का अंकुर पैदा होता है । ये बड़ा सुन्दर उदाहरण दिया है गोसाईंजी ने कि जैसे खेती में आप अच्छा बीज डाल दीजिये, अच्छा पानी लगा दीजिये, अच्छा खेत है, खाद है, सब बातें हैं, बहुत बढ़िया खेत है, बहुत बढ़िया बीज है, अच्छा बोया- जोता गया, पानी लगाया तो निश्चित है - फसल

अच्छी होनी चाहिए, बोले - सब बात बढ़िया है लेकिन अगर नराव नहीं किया गया तो कुछ फसल नहीं होगी, सब चौपट हो गया, खेत भी बेकार गया, बीज भी बेकार जायेगा आपका, पानी का लगाना भी बेकार जायेगा, सब बेकार जायेगा। नाभाजी कहते हैं – 'जब तक कथा-श्रवण रूपी नीर से नित्य पानी नहीं लगाओगे' तब तक भगवत्प्रेम रूपी अंकुर नहीं फूटेगा; चाहे कितना बड़ा बीज है, चाहे कितना बढ़िया खेत है लेकिन नराव (खरपतवार हटाने का कार्य) नहीं किया तो सब बेकार है।

कृषी निरावहिं चतुर किसाना।
जिमि बुध तजहिं मोह मद नाना॥

(श्रीरामचरितमानस, किष्किन्धाकाण्ड -१५)

'नराव (निराई) करना' अर्थात् अपने अन्दर 'मोह' कब पैदा हुआ, कब मद (अहंकार) आ गया अनेक प्रकार का; जैसे – हम पढ़ गए हैं, हम विरक्त हैं, हम महात्मा हैं, हम साधु हैं – 'ऐ, कहाँ गया दुनिया?' ऐसे फटकारते हैं लोग गृहस्थियों को; अरे ! दुनिया क्यों कहते हो? ये हमारे माई-बाप हैं, इन्हीं से तो हम पैदा भये, गृहस्थ से तो हम भी पैदा हुये हैं, आकाश से तो टपके नहीं हो जो दुनिया कहते हो, कोई न कोई तो तुम्हारी माँ होगी, कोई न कोई तुम्हारा बाप होगा; तो दुनिया कहते हो, ये सब 'मद' है, 'मद' की भाषाएँ हैं। इसीलिये "कृषी निरावहिं चतुर किसाना" जो चतुर किसान हैं; चतुर किसान और एक मूर्ख किसान, मूर्ख किसान तो खूब खेत में खाद-बीज देकरके सोचता है कि अब फसल ले लेंगे; वहाँ एक भी दिन नराया नहीं, सब फसल नष्ट हो गयी। अतः "कृषि निरावहिं चतुर किसाना। जिम बुध तजहिं मोह मद नाना॥" ये नराव के बिना ही सब गड़बड़ी होती है; हम जैसे लोग साधु बनने के बाद भी 'एबाउट टर्न' उल्टे लौट जाते हैं एषणाओं की पूर्ति में – सम्मान मिल जाए, मान मिल जाए, पैसा मिल जाए, लड्डू-पेड़ा मिल जाए; इन (कामनाओं) की ओर वृत्तियाँ जितनी हैं, वे सब खरपतवार हैं, 'खरपतवार' माने जो फालतू चीजें हैं वे खेत को नष्ट कर देंगी, फिर खेत में एक पैसा बीज नहीं मिलेगा; इसलिये नराव देना जरूरी है। 'नराव' माने कोई चीज फालतू 'घास आदि' पैदा हुई, उसको उखाड़ कर फेंक दो यानि कोई वासना पैदा हुई, उसको उखाड़कर फेंक दो; ये नराव है और नराव नहीं करोगे तो कुछ नहीं मिलना है, चाहे कितना बड़ा आपका खेत है, अच्छा खाद डाला है आपने, खूब पानी डाला है, सब ठीक है, बहुत बढ़िया बीज आदि है लेकिन कुछ नहीं, सब बेकार हो गया और होता यही है कि चार-छह दिन 'भजन करने के बाद' नराव न करने से लोग उन्हीं चीजों में फिर से लग जाते हैं जिनको छोड़कर आये हैं और इसीलिये वह जागना नहीं रहा।

रसिक संत श्रीहरिरामव्यासजी ने लिखा है –

'व्यास आस सागर में डूबे, आई भक्ति बिसारी।'

कुछ भक्ति का अंश आया था, घर से निकले थे, अरे भाई ! कोई न कोई अच्छे संस्कार से जीव भक्ति करने के लिए निकलता है लेकिन 'आई भक्ति बिसारी' वह सब चली गयी, लुटिया डूब गयी क्योंकि नराव नहीं किया गया।

कई जगह लिखा है महात्माओं ने – "जरा-सी भी आशा आपके मन में आ गयी – ये शॉल देगा, ये आया है लड्डू देगा, ये पूड़ी देगा, इससे भोग मिलेगा; आशा आई कि आप खत्म हो गए, मिट्टी हो गए।"

'भगवान् का भक्त' तो मुक्ति भी नहीं चाहता, 'ये मुक्ति चाहना' जो ज्ञानी लोग मुक्ति चाहते हैं, स्वार्थी हैं। भगवान् का भक्त महान त्यागी होता है, महान दानी होता है। राधारानी के अनन्य भक्त कहते हैं –

'यत्र-यत्र मम जन्म कर्मभिर्नारकेऽथ परमे पदेऽथवा।'

हे राधे ! चाहे मुझे नरक में भेज दो, चाहे परम पद में भेज दो, नरक इत्यादि में जाने का हमें डर नहीं है; जहाँ कहीं भी मेरा जन्म हो, वहाँ केवल आपका सतत् स्मरण व आपके भक्तों का संग मिलता रहे – **'राधिकारतिनिकुञ्जमण्डली, तत्र-तत्र हृदि मे विराजताम्॥'**

उसको विशुद्ध भक्त कहा गया है; यही भाव सनकादिक ने कहा – **कामं भवः स्ववृजिनैर्निरयेषु नः स्ताच्चेतोऽलिवद्यदि नु ते पदयो रमेत।**

(श्रीभागवतजी ३/१५/४९)

मुझे भले नरक में जन्म मिल जाए लेकिन निरन्तर श्रीभगवान् में प्रेम बढ़ता रहे, यही सबसे बड़ी प्राप्ति है, सभी भक्तजन यही कहते हैं। गोसाईंजी ने भी कहा है – **'कुटिल करम लै जाहिं जहाँ मोहि'** हे नाथ ! ये 'नरक में ले जाएँ, अनन्त दुःख के समुद्र में ले जाएँ हमें' तो रोकना नहीं, जाने देना; केवल आपकी निरन्तर याद बनी रहे, इसको वास्तविक भक्ति (असली प्रेम) कहते हैं।

साधन-साध्य 'श्रीइष्ट-भक्ति'

बाबाश्री के सत्संग से संकलित

गोस्वामी तुलसीदासजी प्रभु से प्रार्थना करते हैं –

'कुटिल करम लै जाहिं जहाँ मोहि,
जहँ अपनी बरिआईं।"

(याद रखो कर्म 'बरिआईं' यानि बलवान हैं, तुम कितने भी हथकंडे अपनाओगे; एक दिन रावण को पटक दिया कर्मों ने समय पर, कोई बच नहीं सकता) हे प्रभु ! आपसे केवल प्रेम चाहता हूँ और कुछ नहीं। **"तहँ-तहँ जनि छिन छोह छाँड़ियो, कमठ अंड की नाईं। यह बिनती रघुबीर गोसाईं ॥"** हमें रोकना नहीं, जाने देना नरक में, उन यातनाओं में जाने देना, ये बात केवल कही नहीं गई है; ऐसे भक्त हुये हैं जिनके सामने मृत्यु आई, ऐसे जाने कितने भक्त हैं – 'वृत्तासुर को देख लो' असुर था, प्रह्लादजी को पग-पग पर मौत सामने आई, क्या-क्या नहीं किया गया प्रह्लाद के साथ, क्या अग्नि में नहीं जलाया गया, पानी में नहीं डुबाया गया, क्या विष नहीं दिया गया, क्या अस्त्र-शस्त्र नहीं मारे गए, क्या-क्या नहीं किया गया लेकिन आज तक उन्होंने रक्षा की प्रार्थना नहीं किया। भगवान् स्वयं भागवत में बोले आखिर में 'पाँचवें स्कन्ध में' देखो - आश्चर्य ! 'प्रेम-शक्ति' कैसा आश्चर्य रखती है सामने कि एक छोटा-सा प्राणी जीव अणु, अनादिकाल से जो त्रिताप में जल रहा है, हम-तुम मनुष्य बन गए हैं, हम भूल गए कि चौरासी लाख योनियों में जो कष्ट हमने उठाये हैं, हम यही भूल गए - माता के पेट में हमने कितने कष्ट उठाये, नौ महीने माँ के पेट में 'उस काल कोठरी में' बंद रहे, किसको याद है, क्या किसी को याद है? **'जनमत मरत दुसह दुःख होई'** मृत्यु के समय क्या पीड़ा होती है, क्या किसी को याद है? हम लोग निरीह पशुओं जैसे कष्ट भोगा करते हैं, तामसी योनि में सर्प-बिच्छू आदि बनकर के जलते रहे, क्या किसी को याद है लेकिन अनन्त दुःख को पाने के बाद भी भगवान् कहते हैं कि एक आश्चर्य ये है कि <u>जब इसके भीतर भक्ति आ जाती है तो वो प्राणी अनन्त दुःख सहने के बाद भी मुझसे कुछ नहीं लेता है,</u> ये एक आश्चर्य है – **'मत्तोऽप्यनन्तात्परतः परस्मात् स्वर्गापवर्गाधिपतेर्न किञ्चित्।**
येषां किमु स्यादितरेण तेषामकिञ्चनानां मयि भक्तिभाजाम् ॥ (श्रीभागवतजी ५/५/२५)

"मैं अनन्त ईश्वर उसके पीछे-पीछे नौकर बनके घूमता हूँ – तू मुझसे ले ले, स्वर्ग ले ले, राज्य ले ले, साम्राज्य ले ले, अरे ! ब्रह्मपद ले ले, शिवपद ले ले लेकिन वो सुनता ही नहीं, लेना तो दूर रहा।" ये आश्चर्य है, उसको भक्त कहा गया है; हम जैसे मूर्ख कागज के नोटों का बण्डल बनाकरके रखने वाले क्या भक्त बन सकते हैं? कभी नहीं, एक धोखा है। **"येषां स एव भगवान् दययेदनन्तः"** (श्रीभागवतजी २/७/४२) ब्रह्माजी ने नारदजी को बताया कि बेटा ! ईश्वर की कृपा को नापने का एक पैमाना होता है, उस पैमाने से अपने को नापना चाहिए और हर समय नापना चाहिए; ऐसा नहीं कि थोड़ी देर के लिये सत्संग में बैठे और उस समय तो थोड़ा-बहुत ज्ञान आ ही जाता है सत्संग में, फिर यहाँ से (सत्संग से) निकले, बाहर दूसरा मन बदला तो ये नहीं होना चाहिए; जैसे - डॉक्टर लोग कई बार दिन में टेम्प्रेचर लेते हैं, चार्ट बनाते हैं सबेरे क्या था बुखार, दोपहर में क्या था, रात को क्या, शाम को क्या? तो वैसे ही उन्होंने कहा कि बेटा ! इस पैमाना से हर समय अपने को नापना चाहिए। बुखार तो तीन ही टाइम नापा जाता है; ये जो ऐसा पैमाना है - इससे दिन में, रात में, चौबीस घंटा नापना चाहिए तो फिर काम चलता है। वह क्या है? बोले – "येषां स एव भगवान् दययेदनन्तः" जिस पर अनन्त भगवान् दया करता है तो इसका मतलब हुआ कि उसकी दया भी जब अनन्त होगी तभी माया से छूटता है; जैसे – संसार में दवाई दी जाती है - 'ढाई सौ पावर की, पाँच सौ पावर की, हजार पावर की' जितना बड़ा रोग होता है, उतनी बड़ी दवा दी जाती है - डबल खुराक दिया गया, जैसे – 'पेंसलीन' होती है 'इतने लाख पावर की, इतने लाख पावर की' तो वैसे ही

भवसागर से पार जाने के लिये अनन्त कृपा भगवान् की चाहिए क्योंकि हमारे पाप अनन्त हैं, कर्म अनन्त हैं, तो जब इतनी बड़ी बीमारी है तो फिर उसके लिये छोटी-मोटी दवा से तो काम चलेगा नहीं । "येषां स एव भगवान् दययेदनन्तः" भगवान् का हर काम अनन्त होता है, उसकी कृपा भी अनन्त होगी; तो जो अनन्त कृपा है, वही हमारे अनन्त कर्मों को नष्ट कर सकती है और हमारा साधन उसको नहीं, 'साधन' हम करेंगे, थोड़ा-सा करेंगे । थोड़ा-सा जीवन है, मान लो किसी की 'पचास साल उम्र है, अस्सी साल या नब्बे' मुश्किल से यहाँ तक पहुँचते हैं लोग । तो अगर कोई बचपन से ही साधन करे दिन-रात, पहली बात तो दिन-रात साधन कर ही कौन सकता है? अखण्ड कीर्तन कर लो - साधन होता है मन से, मन इधर-उधर जा रहा है तो साधन क्या है? साधन करने के बाद भी वह साधन सीमित रहेगा । हमने दो घंटा किया, दस घंटा किया, दस महीने किया, दो साल किया तो सीमित साधन अनन्त कर्मों को जला नहीं सकता, इसलिये अनन्त कर्मों को जलाने के लिये अनन्त चीज चाहिए; इसीलिये ये कहा गया है –

'यह गुन साधन तें नहिं होई ।' (रा.मा.किष्कि.२१)

साधन से तुम भवसागर पार नहीं जा सकते हो, कितना तपस्या करोगे - मान लो 'सौ साल की उम्र कर लिया या योगी हैं उम्र बढ़ा लिया हजार साल कर लिया, लाख वर्ष कर लिया, दो लाख' वह सीमित है और हमारे कर्म अनन्त हैं, तो साधन से तुम भवसागर पार नहीं जा सकते हो ।

"यह गुन साधन तें नहिं होई ।
तुम्हरी कृपाँ पाव कोइ कोई ।।"

भगवान् अनन्त हैं तो उनकी कृपा अनन्त है, इसीलिये केवल कृपा से ही आदमी पार जा सकता है । जीवन का सबसे बड़ा लाभ क्या है ? भागवत में लिखा है - समस्त साधनों का, पढ़ने का, लिखने का, साधु-विरक्ति, ये वेद-शास्त्र का एक ही फल है –

एतावान् सांख्ययोगाभ्यां स्वधर्मपरिनिष्ठया ।
जन्मलाभः परः पुंसामन्ते नारायणस्मृतिः ॥

बहुत बढ़िया बात कही है – बड़ा भारी 'सांख्य' माने ज्ञान है किसी के अन्दर 'बड़ा भारी ज्ञानी है' और बड़ा भारी योगी है, योग की समस्त सिद्धियों को प्राप्त कर लिया है अथवा बड़ा भारी धर्मनिष्ठ है लेकिन अंतिम समय भगवान् का स्मरण नहीं आया तो धिक्कार उसके ज्ञान को, धिक्कार है उसके योग को और धिक्कार है उसके सब धर्म को । इसलिए जागना क्या है? 'जागना' माने प्रभु को याद करना है और प्रभु याद कैसे आयेंगे?

यं यं वापि स्मरन्भावं त्यजत्यन्ते कलेवरम् ।
तं तमेवैति कौन्तेय सदा तद्भावभावितः ॥

(श्रीगीताजी ८/६)

भगवान् ने गीता में बताया – एक ही रास्ता है, तुम्हारा जो पिछला अभ्यास है 'प्रेक्टिस है' वही तुम्हें आखिरी समय में सामने आएगी ।

तुम, तुम्हारा टाइम, तुम्हारी याददास्त किधर ज्यादा गयी है? बस उधर ही तुम चले जाओगे । माला फेरते रहो लेकिन प्रश्न है कि तुम्हारी याददास्त कहाँ गयी है, वहीं तुम जाओगे, वही तुम्हारी मंजिल होगी । एक दृष्टान्त है – एक वृद्ध का प्राण निकल रहा था, 'उसका बोल बंद था' और बार-बार ऐसे-ऐसे हाँथ करे, लड़के परेशान कि 'ऐसे-ऐसे हाँथ कर रहे हैं' मतलब कहीं है 'धन', बार-बार ऐसे-ऐसे हाँथ करें; कारण था कि एक गाय की बछिया बुहारी खा रही थी, जिससे वह मरते समय ऐसे-ऐसे हाथ कर रहे थे यानि इस बुहारी को बचाओ, गाय खा रही है लेकिन लोगों ने समझा नहीं, लगे खोदने आँगन को, बहुत बढ़िया 'फ़र्स' बनाया था, सब खोद डाला आँगन लेकिन उन्होंने खोदते समय बुहारी इधर रख दिया था तो बछिया वहाँ भी जाकर खाने लग गयी तो ऊँऽ ऊँऽऽ ऊँऽऽऽ .... अरे, बोले – यहाँ कह रहे हैं पिताजी, यहाँ मत खोदो, इस जगह खोदो; वहाँ भी लगे खोदने... दे-दनादन.....वह बुहारी अब तीसरे कोने में रख दिया था, वहाँ पर भी जाकर बछिया खाने लगी .... ऊँऽ ऊँऽऽ ऊँऽऽऽ .... अरे ! पिताजी कह रहे हैं इस कोने में खोदो, भूल जाते हैं बुढ़ापे में, अन्तिम समय में, इस प्रकार से सारा आँगन खोद डाला । फिर वैद्यजी के पास गए, बोले – चाहे दस हजार ले लो, बोले

– 'मकरध्वज बटी' है हमारे पास, वह बीस हजार की एक खुराक है, बुलवा तो दूँगा । बीस हजार रुपये खर्च कर दिया उन्होंने, 'मकरध्वज बटी' लाकर उनके मुँह पर रख दिया, एक क्षण के लिए उनके प्राण वापस आ गए। उनके लड़के बोले – 'पिताजी ! अब बताईये कहाँ है माल?'

"अरे ! माल नहीं, बुहारी बचाओ, मैं कह रहा हूँ – बछिया बुहारी खा रही है ।" कह करके मर गए, बीस हजार रुपए की 'मकरध्वज बटी' और चली गयी, 'फर्स' तो अलग गया... । तो बात ये है कि हर समय जो चौबीस घंटा हमलोग याद करते हैं वही बात आखिरी समय में आएगी।

तो भैयाओ ! हर समय उसी को याद करो, 'शब वही शब है, दिन वही दिन है जो तेरी याद में गुजर जाए' तब शुद्ध प्रेम की प्राप्ति होगी। 'जो नर होइ चराचर द्रोही' सारे संसार का भी कोई कतल करके चला जाये भगवान् की शरण में तो भगवान् उस पर कृपा कर देंगे, भगवान् इतने कृपामय हैं । अहंकारी के ऊपर दया नहीं होती है "ईश्वरस्याप्यभिमानद्वेषित्वाद् दैन्य प्रियत्वाच्च ।"

नारदजी ने कहा है – किसी प्रकार का भी अहं है, साधन का 'अहं' है, किसी में ज्ञान का है, किसी में वैराग्य का है या हमलोगों में जैसे – 'हम साधु हैं' ये अहं रहता है; ये सब भगवान् से दूर करता है। 'अभिमान' से द्वेष है भगवान् को; तो ऐसा पापी भी अगर 'आवै सभय सरन तकि मोही' 'सभय' भय के साथ आवै, बहुत बड़ा पाप किया है, मारा है, हत्या किया है; 'आवै सभय' भयभीत होकर के हमारी शरण में अगर आता है लेकिन शरण में आने के पहले 'मद, मोह, कपट, छल' ये सब जो है छोड़ना पड़ता है । कपट क्या है? अपनी वासना को बचा के रखना – 'भोग की, ऐश्वर्य की, सम्मान-मान' तीन प्रकार की एषणायें होती हैं, ये हर आदमी के भीतर हैं । 'सुत बित लोक ईषना तीनी' हर आदमी सम्मान चाहता है, वह कपटी है, भक्ति तो मिलनी नहीं है उसको । "सुत बित लोक ईषना तीनी । केहि कै मति इन्ह कृत न मलीनी ।।" "कीट मनोरथ दारु सरीरा। जेहि न लाग घुन को अस धीरा ।।

चिंता साँपिनि को नहिं खाया ।" ऐसा कोई जीव है ही नहीं जिसको ये सब मानसिक बीमारियाँ (मनोरथ, चिंता इत्यादि) न लगी हों। 'मोह' से मतलब सांसारिक आसक्ति - हमारी स्त्री, हमारा बेटा । जब विभीषणजी 'भगवान्' की शरण में गये हैं तो अपनी स्त्री और बेटा-बेटी सब छोड़करके गये हैं; ये सब मोह नरक को ले जाता है; ये बेटा है, बेटी है 'आसक्तियाँ' ये सीधे नरक को ले जाती हैं; इसका प्रमाण देख लो, भागवत-माहात्म्य के चौथे अध्याय में गोकर्णजी ने कहा है – पिताजी ! मोह कर रहे हो बेटे में, ये तुम्हें नरक ले जाएगा । "मुञ्चाज्ञानं प्रजारूपं मोहतो नरके गतिः ।" 'ये हमारी बेटी, ये हमारा बेटा, ये हमारा पति, ये हमारी स्त्री' सब नरक है, मोह को छोड़ना पड़ता है; हमलोग मोह को बचाते हैं; तो मोह, मद को छोड़ो; 'मद' माने नशा – 'जवानी का, पैसे का, पढ़ाई का, विद्या का, तप का' ये सब 'मद' पैदा करता है । शिवजी ने कहा है – श्रीमद्भागवतजी '४/३/१७' में **"विद्यातपोवित्तवपुर्वयः कुलैः सतां गुणैः षड्भिरसत्तमेतरैः ।"** विद्या, तप आदि दुष्ट लोगों को मद पैदा कर देता है और संतों में दीनता आदि सद्गुण उत्पन्न कर देता है। 'तप' रावण आदि ने कितना किया? 'मद' पैदा कर देगा, भले साधु बन जाओ, कुछ बन जाओ। ये छः चीजें 'विद्या, तप, वित्त (धन), वपु-वय, कुल अच्छा' ये सब संतों के लिए तो ठीक हैं बाकी 'असत्तम' दुष्टों के लिए 'मद' पैदा कर देती हैं। थोड़ा-सा पढ़ लिए, थोड़ा-सा वैराग्य कर लिए, थोड़ा-सा तप कर लिए; ये सब मद पैदा कर देता है, विष पैदा कर देता है तो मद छोड़ो । "तजि मद मोह कपट छल नाना । करउँ सद्य तेहि साधु समाना ।" (श्रीरामचरितमानस, सुन्दरकाण्ड -४८) मायिक विकारों को छोड़ने पर तुरन्त वह साधु बन जाता है । इन सब विकारों (मोह, मद, कपट) के रहते आदमी 'साधु' नहीं बन सकता, कपड़े से साधु कोई नहीं बनता। जब तक ये चीजें हैं - मोह है, कपट है, वासना है, मद है, छल है तो साधु नहीं है, ये एक अकाट्य सिद्धांत गुरुदेव वशिष्ठजी ने भगवान् से कहा – हे राम ! अंतःकरण के जितने भी मल हैं, वह सब अति शीघ्रता से प्रेम (भक्ति) रूपी पानी से धुल जाते हैं।

कोई महापुरुष मिल जाय, उसी के पीछे चले जाओ तो कल्याण है ।

निर्वासना से निर्मलता

बाबाश्री के श्रीमद्भगवद्गीता-सत्संग (२/२/२०१२) से संकलित

हम लोग जरा-जरा सी बात में चिढ़ जाते हैं, यह सोचकर कि हमारी बात नहीं मानी, हमारी बात काट दी तो फिर क्रोध करते हैं, अहंकार करते हैं । इस तरह फल हेतु वाले कृपण होते हैं, नीच होते हैं । वे कब बिगड़ जाएँ, इसका कुछ पता नहीं, कब तुमसे सम्बन्ध तोड़ दें, कुछ पता नहीं । ऐसे फल हेतु वाले चार आने पर ही लड़ सकते हैं । बहुत जल्दी वे नीचता पर चले जाते हैं । उनका हर कर्म अत्यंत नीच होता है जबकि बुद्धिमान पुरुष का हर कार्य बुद्धियोग से युक्त होता है, समानता से युक्त होता है । उदाहरण के तौर पर राम-रावण के युद्ध में रावण ने भगवान् राम से बहुत सी ऊटपटांग बातें कहीं तब भगवान् ने कहा कि तीन प्रकार के लोग होते हैं । एक तो वे जो फूल देते हैं, दूसरे फल देते हैं और तीसरे जो फल-फूल दोनों ही देते हैं । **जनि जल्पना करि सुजसु नासहि, नीति सुनहि करहि छमा । संसार महँ पूरुष त्रिबिध पाटल रसाल पनस समा ।।**

(श्रीरामचरितमानस, लंकाकाण्ड - ९०)

तीन प्रकार के लोग होते हैं जैसे गुलाब का फूल, आम और कटहल । गुलाब में तो केवल फूल होता है, कटहल में फल व फूल दोनों होते हैं तथा आम में केवल फल होता है । उसी प्रकार उत्तम पुरुष वे हैं जो कहते भी हैं और करते भी हैं । एक ही क्रिया से लोग उनको जान जाते हैं । रावण सोचता है कि राम डर रहे हैं । भगवान् राम ने कहा कि जो फल-फूल दोनों देता है, वह उत्तम पुरुष है, वह जो कहता है वही करता भी है अतः मनुष्य को बिना विचार किये नहीं बोलना चाहिए । कटहल बनना चाहिए । कटहल फल-फूल दोनों देता है । ऐसा पुरुष उत्तम श्रेणी का होता है । हम लोग तो बोलते ही चले जाते हैं क्योंकि विचाररहित हैं इसलिए अत्यंत नीच हैं । जिस मनुष्य में बुद्धियोग नहीं है, अपनी बुद्धि को रोक नहीं सकता है, अपनी बुद्धि को समान नहीं बना सकता, वह अत्यंत नीच है।हर कर्म बुद्धियोग के साथ होना चाहिए । बुद्धियोग से तात्पर्य है – समान रहने की अक्ल । जब चाहे अपनी बुद्धि को रोक लिया, ऐसे व्यक्ति को मनीषी कहते हैं । मनीषा माने बुद्धि और मनीषी का अर्थ है बुद्धि वाला और जो मनीषी नहीं होता, वह अपनी बुद्धि को रोक नहीं सकता, उसकी बुद्धि लुढ़की तो लुढ़क ही गयी । जैसे किसी ऊँचे स्थान से गेंद को लुढ़काया जाये तो वह नीचे लुढ़कती ही चली जाती है । बीच में रुकेगी नहीं । उसी प्रकार लोगों की बुद्धि होती है, लुढ़की तो लुढ़कती ही चली जाती है, बीच में रूकती नहीं है । अतः भगवान् ने कहा कि फल को दृष्टि में रखकर कार्य करने वालों की बुद्धि अत्यंत नीच होती है, उनमे बुद्धियोग नहीं होता । अतः बुद्धि की शरण में जाओ । अत्यंत नीच लोगों का लक्षण है कि केवल फल पर दृष्टि रखते हैं जैसे हमारी बात कट गयी, हमारी बात सही है, तुम्हारी बात गलत है।इस तरह के लोग केवल फल पर दृष्टि रखते हैं और उसी फल के कारण घंटों लड़ते हैं । यह अत्यंत नीच पुरुषों का लक्षण है । ऐसे पुरुषों से संभलकर व्यवहार करना चाहिए क्योंकि एक क्षण में ही वे कहाँ से कहाँ पहुँच जाते हैं ।

श्लोक – ५०

बुद्धियुक्तो जहातीह उभे सुकृतदुष्कृते ।
तस्माद्योगाय युज्यस्व योगः कर्मसु कौशलम् ।।

समत्व बुद्धि से युक्त मनुष्य सुकृत व दुष्कृत दोनों प्रकार के कर्मबंधन को छोड़ देता है, इसलिए हे अर्जुन ! तू समत्व रूपी योग में लग जा । यह समत्व रूपी योग ही कर्मों में कुशलता है । दुष्कर्म (पाप) और सत्कर्म (पुण्य) दोनों ही बंधन हैं । पुण्य से भोग मिलता है, भोग पाप से बांधता है और पाप से विपत्ति आती है । पुण्य और पाप दोनों ही बंधन हैं, इसलिए समत्व की बुद्धि से युक्त मनुष्य इन दोनों को जला डालता है । यह समत्व ही सबसे बड़ा योग है । **"समत्वं योग उच्यते"** समत्व का अर्थ है - समान रहना । सुख-दुःख में, लाभ-हानि में, जन्म-मृत्यु आदि

समस्त परिस्थितियों में बुद्धि समान रहनी चाहिए। सिद्धि-असिद्धि में मनुष्य समान है तो समत्व योग आ गया और यह समत्व योग ही कर्मों में कुशलता है।

श्लोक – ५१

कर्मजं बुद्धियुक्ता हि फलं त्यक्त्वा मनीषिणः।
जन्मबन्धविनिर्मुक्ताः पदं गच्छन्त्यनामयम्॥

कर्मज फल को यदि हम लोग छोड़ दें तो जन्म के बंधन से छूट जायेंगे तथा अनामय पद को प्राप्त हो जायेंगे, जहां कोई बीमारी नहीं, जन्म-मृत्यु नहीं है। कर्मज फल को छोड़ना- यही एक ख़ास बात है, जिसका पालन हम लोग नहीं कर पाते हैं। कर्मज फल क्या है? यह है मान-सम्मान तथा लौकिक प्राप्ति- पैसा-धैला आदि। सबसे अधिक मान-सम्मान है,इसको आदमी नहीं छोड़ पाता है लेकिन वीर पुरुष वही है जो कर्मज फल को छोड़ देता है। मनुष्य कर्मज फल को नहीं छोड़ पाता। यह मान है, यह अपमान है, इसी में वह फंसा रहता है। यह लाभ है, यह हानि है- इसको जो छोड़ देता है, वह कर्मज फल का त्यागी है, वह मनीषी है। मनीषा का अर्थ है बुद्धि, जिसकी बुद्धि अपने हाथ में हैं, उसको मनीषी कहते हैं।

दुनिया में यश हो जाना बड़ी बात नहीं है बल्कि यश होने के बाद उसे ठुकराना बड़ी बात है। कोई कर्म करना है तो कर्मज फल को छोड़कर करो। कर्मज फलों को छोड़ना सीखो। मान होगा, अपमान होगा- ये सब चीजें मनुष्य को भय व कपट सिखाती हैं और जो मनीषी है वह इन सबको छोड़ देता है तथा जन्म-बंधन से मुक्त हो जाता है और अनामय पद को प्राप्त करता है।

श्लोक – ५२

यदा ते मोहकलिलं बुद्धिर्व्यतितरिष्यति।
तदा गन्तासि निर्वेदं श्रोतव्यस्य श्रुतस्य च॥

मोह का कीचड़ बुद्धि में घुसा हुआ है और हम इसमें फंसे रहते हैं। यह मोह का कीचड़ जब बुद्धि पार कर लेती है तब सच्चा निर्वेद (वैराग्य) पैदा होता है सुनने योग्य तथा सुने हुए विषयों से।

श्रोतव्यस्य – जिनका सुनना बाकी है तथा **श्रुतस्य** – जिनके बारे में सुन चुके हैं, उन सभी विषयों से मन हट जाता है। दो प्रकार का भोग होता है – एक तो जो नहीं मिला है और दूसरा जो मिल चुका है - इन दोनों से ही मन हट जाता है तब बुद्धि मोह के कीचड़ को पार करती है। मोह रुपी कीचड़ बुद्धि को फंसाए रखता है। निर्वेद तभी होता है जब जो चीज अभी नहीं मिली है, जिसका मिलना बाकी है और जो चीज मिल चुकी है, उन दोनों से बुद्धि अलग हो जाये। यही गीता का सार है किन्तु बुद्धि इनसे अलग नहीं हो पाती। गुरु के प्रति तो मनुष्य को कभी भी अपने मान-सम्मान के बारे में नहीं सोचना चाहिए, कर्मज फल के बारे में नहीं सोचना चाहिए।

श्लोक (२/५१) में जो भगवान् ने कर्मज फलों को छोड़ने की बात कही है, यही एक लोहे का चना है। इसको छोड़ने से मनुष्य जन्म-बन्धन से छूट जाता है और अविनाशी पद को प्राप्त कर लेता है। कर्मज फल को मनुष्य नहीं छोड़ पाता है क्योंकि उसकी बुद्धि मोह के कीचड़ अथवा मोह के अंधकार को पार नहीं कर पाती है। उसको पार करने के बाद ही सच्चा निर्वेद होता है।

श्लोक – ५३

श्रुतिविप्रतिपन्ना ते यदा स्थास्यति निश्चला।
समाधावचला बुद्धिस्तदा योगमवाप्स्यसि॥

वेद पढ़ने से भी बुद्धि विप्रतिपन्न हो जाती है, शरणागति से अलग हो जाती है। प्रतिपन्न से उल्टा है विप्रतिपन्न अर्थात् वेद पढ़ने से बुद्धि और गड़बड़ हो जाती है, चंचल हो जाती है। प्रश्न उठता है कि यदि वेद पढ़ने से भी बुद्धि गड़बड़ होगी तो फिर निश्चल कैसे होगी ? भगवान् में जब बुद्धि अचल हो जाएगी तब तुम योग को प्राप्त हो जाओगे, उसके पहले मनुष्य योग को प्राप्त नहीं हो सकता। जब तक बुद्धि स्थिर नहीं है तब तक योग की प्राप्ति नहीं हो सकती। अब गाड़ी अटक गयी कि पहले बुद्धि स्थिर हो जाये तब योग की प्राप्ति होगी, नहीं तो नहीं होगी इसलिए पहले बुद्धि को ही स्थिर किया जाये क्योंकि भगवान् ने कहा–**बुद्धौ शरणमन्विच्छ** – उस बुद्धि की शरण में जाओ तब काम बनेगा।

श्री गुरु पूर्णिमा उत्सव

ब्रज के पर्वतों की रक्षा के प्रति संत श्री विजय बाबा का अलौकिक बलिदान

दैनिक भास्कर **भरतपुर भास्कर** 24-07-2022

दैनिक भास्कर **भरतपुर**

दोपहर को हुई बाबा विजयदास की अंत्येष्टि, अंतिम दर्शन को उमड़ा लोगों का हुजूम

बाबा के सम्मान में रो उठा बृजांचल

भास्कर संवाददाता | डीग/भरतपुर

बाबा विजयदास की पार्थिव देह का शनिवार को गमगीन माहौल में अंतिम संस्कार किया गया। हंगामे से बचने के लिए प्रशासन ने बरसाना में अंत्येष्टि कराई। बृज भूमि के ऐतिहासिक पहाड़ों को बचाने के लिए 18 साल पहले शुरू हुए आंदोलन की आग आखिर संत बाबा विजयदास के बलिदान से बुझी। उन्होंने 20 जुलाई को डीग के पसोपा में चल रहे आंदोलन के दौरान पेट्रोल छिड़क कर खुद को आग के हवाले कर दिया था। डॉक्टरों के मुताबिक वे 90 प्रतिशत तक झुलस गए थे।

आदिबद्री और कनकांचल पर्वतों को वन क्षेत्र घोषित करने में देरी को लेकर संत और स्थानीय लोग काफी नाराज हैं। उनका कहना है कि यह नोटिफिकेशन अगर पहले ही कर दिया जाता तो बाबा विजयदास को बलिदान नहीं देना पड़ता। बृज पर्वत एवं पर्यावरण संरक्षण समिति के अध्यक्ष एवं पसोपा आंदोलन के अगुआ राधाकांत शास्त्री ने इसके लिए दोषी अफसरों पर कार्रवाई किए जाने की मांग की है। बृज पर्वत व पर्यावरण संरक्षण समिति के मुताबिक बाबा विजयदास मूलतः हरियाणा में भिवानी जिले के बड़ाला गांव के रहने वाले थे। वे वर्ष 2002 से ही बरसाना स्थित मान मंदिर में रमेश बाबा के सानिध्य में बतौर संत निवास कर रहे थे। विजयदास निम्बार्क परंपरा से दीक्षित थे। वर्ष 2021 में 16 जनवरी को जब डीग के पसोपा में आदिबद्री और कनकाचल पर्वतों को बचाने के लिए आंदोलन शुरू हुआ तो वे वहीं रहकर प्राचीन पशुपति नाथ मंदिर में सेवा कर रहे थे। बाबा उन 14 संतों में शामिल थे जिन्होंने 17 जुलाई, 2022 को खनन कार्य बंद नहीं होने पर राज्य सरकार को आत्मदाह करने की चेतावनी दी थी।

बाबा विजयदास के अंतिम दर्शनों के लिए आसपास के गांवों के लोगों का जुटना सुबह से ही शुरू हो गया। लोग उनकी पार्थिव देह के पास जयकारे लगाते भी नजर आए। जब उनका अंतिम संस्कार हुआ उस समय भी लोगों ने जयकारों के साथ बाबा को अंतिम विदाई दी।

डीग. बाबा विजयदास के अंतिम दर्शनों के लिए उमड़ा श्रद्धालुओं का हुजूम।

डीग. बाबा विजयदास को श्रद्धांजलि देते केबिनेट मंत्री।

डीग. उत्तर प्रदेश के राज्य मंत्री लक्ष्मी नारायण चौधरी भी मौके पर पहुंचे।

डीग. पूर्व कृषि मंत्री प्रभुलाल सैनी व भाजपा प्रदेश महामंत्री भजनलाल भी पहुंचे।

RNI Reference No. 1313397 - Registration No. UP BIL-2017/72945 - Title Code UP BIL-04953
Postal Regd. No. MTR 093/2021-2023
श्री मान मंदिर सेवा संस्थान के लिए प्रकाशक/मुद्रक एवं संपादक राधाकांत शास्त्री द्वारा Gupta Offset Printers A -125 /1, Wazirpur Industrial Area, New Delhi -52 से मुद्रित एवं मान मंदिर सेवा संस्थान, गह्वर वन, बरसाना, मथुरा (उ.प्र.) से प्रकाशित